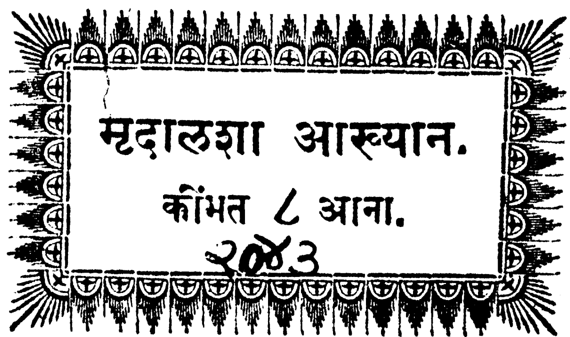

मृदालशा आख्यान.
कींमत ८ आना.
२०४३

मदालसाख्यान.

श्रीमन्महा कवि
प्रेमानंद भटनुं रचेलुं.
तेनो सारोद्धार करावी
वडोदराना पुस्तक वेचनार रण-
छोडलाल मोतीरामे
छपावी प्रसिद्ध कर्युं.

अमदावाद मध्ये.
मामानी हवेली मध्ये अमदावाद यु
नाईटेड प्रिन्टींग अने जनरल
एजन्सी कंपनी (लिमिटेड)
ना प्रेसमां रणछोडलाल
गंगारामे छाप्युं.
संवत १९४० सने १८८३
किंमत रु ०-८-०
आ पुस्तक सने १८६७ ना २५ मा
आक्ट मुजब रजीस्टर करा-
व्युं छे.

सूचना.

प्रेमानंद सरखा समर्थ ने प्रख्यात कविश्वरना काव्यने प्र-
स्तावनानी जरूर नथी, पण सद्गृहस्थोने सूचववानुं ज-
रूरनुं ज के, आ मृगालसा आख्यान; जे मार्कंड पुराणमांनो
कथा भाग छे. जेनो सारांश एवो छे के पांडवो ए कौरवकुळ
निकंदन कर्युं. त्यार बाद युधिष्ठिरने महा खेद उत्पन्न थयो तेवे समे यु-
धिष्ठिरनी सभामां नारदमुनि आव्या, ने सभा सन्मुख जोई पुछ्युं के तमो
जे दुश्मनोनो जय टाळ्यो ने हवे शा माटे उदासी छो. त्यारे युधिष्टिरे
कह्युं के मुनिमहाराज में आ पापी पेट माटे मारा कुळने निकंदन कर्युं,
ने फरी कोई स्वप्नामां पण जोयुं नहीं. माटे हे मुनी महाराज कोई
जणीने जन्म थयुं, ने फरीने जीव्युं होय? मुनीए कह्युं के हा मृगा-
लसा नामे एक स्त्री मृत्यु पामी तेने जन्म करी ने ते फरीने जीवी
छे. युधिष्ठिरे कह्युं के, मुनी महाराज मने कृपा करी ते कथा कही संभ-
ळावो के मारा जीवने संतोष थाय. ते उपरथी ऋषीये युधिष्ठिरने
आ कथा कही संभळावी छे.

आ कथा घणी रसालंकार छे. ने एनी प्रत आजदीन सुधी
छपायेली जोवामां आवेली नहीं. तेथी घणा लोकोना आग्रह उ-
परथी एनी लखेली प्रत वडोदराना ठक्कर कालीदास जेचरदास
पासेथी लावी तेने शुध्ध करावी तेना उपरथी आ बाहार पाडी छे.
माटे ते लखेली प्रत आपनारनो आभार मानवा आ तक ए चूकतो नथी.

ता. १५ माहे डीसेंबर
सने १८८३

बुकसेलर ठक्कर रणछोडलाल मोतीराम
(सही.)
प्रसिद्ध कर्त्ता.

जाहेरखबर.

नीचे लखेलां पुस्तको मारे त्यांथी मळशे.

सुधन्वा आख्यान. महान कवि प्रेमानंद कृत.......... रु. ०-५-०
जलंधर आख्यान. खंभातवासी रेवाशंकर कृत.... रु. १-८-०
अभिमन्यु आख्यान. प्रेमानंद कृत.......... रु. १-०-०
लक्ष्मीजी अने पार्वतीजीनो संवाद.......... रु. ०-१-०
सुंदरजी बीजास मनहर गरबावळी आवृत्ति बीजी... रु. ०-८-०
ओखाहरण प्रेमानंद कृत उपरथी दयाशंकर लालजीए सुधारेलुं रु. १-८-०
चंद्रहास आख्यान. (हवे पछी.).......... रु.
वडोदरा वर्णन साथे प्रस्ताविक प्रसंग.......... रु. ०-४-०
गायकवाडी राज्यनो इतिहास.......... रु. ०-४-०
गायकवाड इलाकानी भूगोळ.......... रु. ०-२-६
अंधेरी नगरीनो गर्धवसेन (हरगोवनदास कृत).... रु. १-४-०
मदालसा आख्यान. (प्रेमानंद कृत.).......... रु. ०-८-०
नरसिंह मेहेताना पितानुं श्राद्ध. (रेवाशंकर कृत)... रु.
रेवाशंकर कृत काव्य. (हवे पछी.)

आ सिवाय कायदाओ तथा वारताओ तथा शाळोपयोगी तथा नाटको वीगेरे दरेक जातनां पुस्तको मारे त्यांथी मळशे.

मु. वडोदरा. रायपुरा नवाब साहेबनी हवेली नीचे. } बुकसेलर डा. रणछोडलाल मोतीराम
सही.


वैशंपायनऋषी·
जन्मेजयराजा·
नारदऋषी·
युधिष्ठरराजा·

मृदालसाआख्यान.



श्री गणेशायनमः॥ ॥श्री सारदाय नमः॥

अथश्री कृष्णनी कृपाए करीने आख्यान मृदाल
सानुं लख्युं छे॥ ॥कडवुं १ लुं॥ ॥
राग केदारो॥ ॥प्रथमे प्रणमुं गणपती॥
जेथी टले महा दुरमती॥ सार करो मुने सर्स्व-
ती॥ हुं मूढ मति जेतो नथी॥१॥ ॥दाण
॥ ॥सेवक जाणी तम तणो॥ कल्याणिक
रो कीपाये॥ कमला कुंवरीने आराधुं॥ जे मनो
रथ पूरण थाये॥२॥ दास जाणि दया मन आ-
णी॥ देवि थजे तुष्टिमान॥ गत आपो पद बं-
ध करवा॥ मृदालशा आख्यान॥३॥ वैसमपा-
यन वाणि वदे॥ सुंण जनमेजे राजन्न॥ अेकवा
र युधिष्टर राज॥ हस्तिना पुरमांहे रतन्न॥
जा लोचन सर्वे सजन्य लासे॥ कौरव गया सुर
लोक॥ तेथी युधिष्टर राज करंते॥ अंतर उपन्यो
शोक॥४॥ अरर आ पापी पेट माटे॥ सर्व जन्न
पमाड्या मर्ण॥ सुजने माथे सेल पडो॥ आरा
जछे लोहिवर्णी॥५॥ पोते करे छे कल्पना॥ जे

वे आव्या नारद मुन्य।। पांडव अल्प लेश्या वणि
जे ते।। सत्ला दिठी छे सून्य।।७।। महीपती मण-
वा धस्या।। मणी दिधुं मुनीने मान।। दिव्यासने
बेसाडि लूपे।। पूज्या श्री लगवान।।८।। विस्म
य थईने देव रुपी अेम।। पांडव प्रत्ये पूछे।। सूल
ट को लासता नथी अे।। कारण कोनी शुं छे।।९
।।राजा शत्रु केरी हाणी।। रह्या नको अकां राया।।
कांये पांडव लेम कशाळे।। श्रीहरी केहने सकाया।।
१०।।नीर कटक पृथ्वियें पड्यूं।। दिठूं स्वर्गनुं सुःख
।।ते तम मनथायी लुवो अे।।कोए प्रगटयूं दुःखा।।
११।।धर्म करे राम की।। अमें मार्या सकू लला।।दु
रि अमें दीठुं नहिं अे।। अेको वार स्वपन्ना।।१२।।पि
ताऐ लाई पिता मक गुरु जी।। तेकपमाड्या म-
र्ण।। अलिमन्यू सरखो पुत्र पडियो।। सगो जां
घव कर्ण।।१३।। गहनगत संसारनि जे छे।। मा
यानुं आवर्ण।। कह्यो नारदजी अे शुं करो।। को-
ए पामे छे मर्ण।।१४।। मर्ण पाम्याने छेंन दि
धूं।। करि जीवे छे जी जी वारा।। यम लोकथि पाछूं
कस्युं होय।। ते कहो ब्रह्म कुमारा।।१५।। देव रुषि अे
म जोलिया।। सूणो युधिष्ठर राजन्ना।। मृगाल-

शा मरिने लिधी छे ॥ तेहनुं कहुं आख्यान ॥५॥
॥ कथा जेह इतिहासनी ॥ महा मार्कंड पुराण ॥
धर्म कहे रे स्वामिजी ते ॥ कहोनी यथार्थ वाण ॥६॥
॥ ॥ वचण ॥ ॥ कहिये वेणापाण मुन
ने ॥ प्रेम धरि इतिहास रे ॥ पुनरपि जीवी प्रेमदा
॥ तेह वण कारण हासरे ॥ ८ ॥ ॥ कडवुं ॥ २ ॥
॥ ॥ राग आसावरी ॥ ॥ नारद जी ओ
म उच्चरे रे ॥ सांभलप पांडु कुमार ॥ ऋषि मार्कंड
तप करता हुं ॥ अनवि तट मोलार ॥ १ ॥ मघवा
ने मन चिंता उपनी ॥ रखे लेतो इंद्रासन्न ॥
मेनका छलवा मोकली ॥ जेम तप थाये निर्धन्न
॥ २ ॥ सांचरी सांतरी थैने ॥ सजी शुल शृंगार
॥ मुनी मुख आगल आविने ॥ करती हवी थै
कार ॥ ३ ॥ कोकिला कंठ करिने ॥ गाति संगित गी
त ॥ पंच बाण मार्यो मकरध्वजना ॥ ते चित्त लाग्यो
अतित ॥ ४ ॥ अनंग यहो आकूल व्याकुल ॥ त्व
थयो तपनो लंग ॥ उठि चाल्या अजला पुठे ॥
देखी सरिर सुरंग ॥ ५ ॥ उठि मेनका अंतरिक्ष
मारगे ॥ रुषीनुं हवुं क्षेपल मन्न ॥ काम पूरण
कांई न सूझे ॥ पछे दोउला ते वन्न ॥ ६ ॥ विर्य

पडियूं तट ऊपर त्यांहां॥ उडि गया गंगातीर॥
एक घडिका जे असुद्धि टणि॥ वणि शुद्ध थयुं श-
रीर॥ ७॥ हवे एक त्यां जगली आवी॥ म-
च्छनूं धारि लोचन्न॥ तर्तु विर्य जति ऊल्बण
दिठूं॥ कीधूं ते प्रासन्न॥ ८॥ गर्भ रह्यो ते पक्षिणी-
ने॥ प्रसव्या सप्त कुमार॥ पांचो परम मनोहर
रतन॥ पण पुरुष तणो आकार॥ ९॥ जगलीम-
न आनंद पामी॥ प्रेम धरीने पाळे॥ ऊडीने नव जे-
सवा लाग्या तव॥ त्यार न ऊड्यो मळे॥ १०॥
लक्ष करे पोतानी मेळे॥ केयी आपती मात॥
हवे तपरा करतो ने कुशा आव्यो केनो तात॥
११॥ तापसने आवतो देखी॥ गयां तेहनी पासे॥
पुन्न किधी पक्षिये मुनिनी॥ तय करण्या आतिथि-
ल्हासे॥ १२॥ मांईड मन विमासता॥ भूत भवि-
ष्य वर्त्तमान॥ पक्षिणीथी प्रसव पाम्या पण॥
म्हारां ए संतान॥ १३॥ स गाठे नणावी सू-
तन॥ वणि लेटि मनव्यो ऊनेस॥ आसने ते-
ड्या पोताने पछि॥ आपियो उपदेश॥ १४॥ नि-
गम शास्त्र भणाविया॥ जने जाण्युं आतम
ज्ञान॥ संसारनुं सुख ते दुःख करिने॥ ओळखा

ध्या भगवान ॥ ५ ॥ ॥ वलण ॥ ॥
ओण जाण्या श्री भगवानने ॥ ब्रह्मज्ञानी सुत
कर्या ॥ पछी पुत्रने निजज्ञान आपी ॥ पिता अहरा
त्यांथी थया ॥ ६ ॥ ॥ कडवुं ॥ ३ ॥ ॥ राग
केदारो ॥ ॥ नारद कहे ओम ओथरे रे ॥ ध
र्म सुत श्रवणे धरे ॥ शुं करे सकरिावन विषे ॥ ज
छे कंद मूल धिहा रीजे ॥ १ ॥ ओक रुलभड नामे मुनी
भगवान ॥ ते छे छे आतमज्ञान ॥ ते स्थानक जा
थी करे रुल मुजो ॥ कहो पक्षी जेहा तमो सुणो ॥ २ ॥
॥ ॥ ढाळ ॥ ॥ रे भलभड मुज जोलियो
॥ पक्षिने करी पणाम ॥ गुरु थै मुने ज्ञान आपो ॥ ओ
याउ श्री धाम ॥ ३ ॥ तव पक्षिये शिस्य करी राख्यो ॥
आप्यो ब्रह्म उपदेश ॥ मोह भ्रमणथी मुने मुकाव्यो ॥
कहि टाल्यो कर्म कलेश ॥ ४ ॥ सत्त गुरु कहे सांभणरु
भलड ॥ हरिभक्तिथी मुक्ती मणे ॥ ओवुं भणी
भने भावे ॥ आवागमन करोटणे ॥ पण शिष्य
कहे सांभणिये स्वामि ॥ कोण मृत्यु थई कव्युं ॥
भस्म थई यम लोकथी मुकि ॥ कोनी कोण पाछूं
करयूं ॥ ५ ॥ गुरु कहे छे तिहास छे ओक ॥ ते कहुं पि-
स्तारी ॥ पूर्वे मृत्यु थई जिवी छे ॥ मृगालेखा ओक

नारी॥ गा गालव नामे ऋषीश्वर मोटो॥ तेणे
आरंभ्यो यज्ञ॥ गंगा तट तप कीधो आकरो॥ पध-
राव्या मुनी सुज्ञ॥ ८॥ ब्रह्मचारी गृहस्थ वान
प्रस्थ॥ त्रिपात संन्यासी॥ सप्त ऋषी आदे
सहू आव्या॥ मुनी सहस्र अठ्यासी॥ ज्यां वेदि
यानि वर्तणि कीधी॥ कुंजरी कीधा स्थापन्न॥ हुत
द्रव्य होमे निवेदी मांहे॥ धुम्र छायो गगन्न॥
९॥ हवे केतु दानवना कुंवर॥ महा मायावी पापी॥
पातालकेतुने तालकेतु॥ तेणे प्रज्ञ सर्व संतापी
॥१०॥ ते पांचमे पाताळ वसिया॥ नारद सादनन्न
णी॥ ते घेर वणा घिस गया॥ महा हर्ष मनमां
आणी॥ परा आरोपी पुष्पनी माळ कंठे॥ पुन्य
पछे मुनीराय॥ हैत करी तेले स्वामी आव्या॥
पण कोणे किधी पुन्नया॥११॥ नारद कहे तमो टळ्या
आने॥ छे गालवने घेर जगा॥ देवे मांही मांहे
वढिने॥ कहाज्यो तमारो लाग॥१२॥ शक्ति
होय तो लई लूंटो॥ पडो यज्ञमां त्रूटी॥ साम-
ग्री अनंत छे त्हां॥ ते लै आवो लूटी॥१३॥ ॥
वळण॥ ॥ सूंटि लोहो कहि वच्या नारदा॥ अ
सुर सामग्री करे॥ लट प्रेमानंद आम कहे॥ पछे शुं

पुन्य प्रतापेंरे ॥ ५ ॥ ॥ढाल ४ थुं ॥ ४ ॥ ॥ ॥
राग काफीनेशे ॥ ॥ दानव जेहुवे मायाकी
धी ॥ यज्ञ करवा लेंगरे ॥ पृथ्वीले ही जहार निस-
र्यो ॥ प्रगट्युं प्रौढ म्होटुं अंगरे ॥ दानवा ॥ टेक ॥ १ ॥
नारदने नोतर्‍ं ऋषी विसरया ॥ तेथकी रीसमें अं
तर आवीरे ॥ यज्ञ लागवा ब्रह्म सुते आ ॥ दैत
मुक्या हूलकावीरे ॥ दानवा ॥ २ ॥ करता गरजना
गंगातटपर ॥ मुःखे पाडता स्होररे ॥ अंन्ये वेरि
रही अंतरिक्षे ॥ करे अंघार्‍ं घोररे ॥ दानवा ॥ ३ ॥
करे कारणनें कडकडाट ॥ वरसे मांस रुधिररे ॥
दशो दिश अंधारिनें लीधी ॥ पापी पाडे चीसरे
॥ दानवा ॥ ४ ॥ गिरि तरुवर वरसे परजन्य ॥ जी
व्हा ब्राह्मण मात्ररे ॥ जेजेमतें तेम सरवे न्हाठुं
रे ॥ वस्त्र पुस्तक पाणी पात्ररे ॥ दानवा ॥ ५ ॥ गौ
तमजी ने गर्गाचार्य ॥ वशिष्ठ ने वामदेवरे ॥ अ
त्रिज अगस्त नें दुर्वासा ॥ नाठा सहु ततखेवरे
॥ दानवा ॥ ६ ॥ मित्र वरुण वायू नें वाल्मिक ॥ राज
रशी विस्वामित्ररे ॥ सरव गया न रह्या जेह मां
॥ पछे गालव मुनी मित्तरे ॥ दानवा ॥ ७ ॥ ऋषी
दुःखीथै योगम नाठा ॥ पापीष्ट पडीया त्रुटीरे ॥

यज्ञ सामग्री त्हांना विघनी॥ ते सहू लीधूं लुंटीरे ॥ धान्नथाला पाक शाकनां पात्रक त्होरां॥ मांहेल यों सहु अन्नरे॥ ते सहु पातांपे ले नाख्युं॥ लिधुं दक्षणानुं धन्नरे॥ धन्नथाला मंडप ठीरादीना- ख्यो ते पछी॥ गया ग्राम पातापरे॥ गालव मन अति शोकक पाम्यो,॥ याल्युं नहिं ते ग्रापरे॥ धन्न थाणा ॥ वलणा ॥ ते समये समर थ को नहीं ने॥ असुर वर्गीने हणे॥ पछे आसन पा त ऋषीजे कर्युं॥ लट प्रेमानंद जे ल्हणे॥ १॥ ॥ कडवुं ५ मुं॥ ॥ राग देशाख॥ ॥ ब्राह्म ण सहू नासी गयारे॥ जेम तेम जारे वाट॥ थ ई गया अति गरगणरे॥ गालव मन मांहे उचाट॥ १॥ सामग्री ने मांहेरीरे॥ सर्व लई ग या पातांपा॥ मेहे एउं जे ह्लोटुं थयुं रे॥ ऋषी त्हांन अंतरियाणा॥ रा॥ पुस्तक आकरमे पड्यां रे॥ कें कूट्यां पाणी पात्र॥ लाई जो मुक लूख्या गयारे ॥ मम कार्यथी मुनी मात्र॥ ३॥ म्हें जन्म शाने ध र्यो रे॥ क्हां प्रसव किधो मात॥ ओछरी हूं गुणथी भण्यो रे॥ आ ते शो उतपात॥ ४॥ नेनेअंतःपर नीपने रे॥ ते तो म्हारा कर्मनो वांक॥ यज्ञ तो आ-


तालकेतू.
पातालकेतु.
ऋषी.
ऋषी
यज्ञकुंड
ऋषी.
ऋषी.
ऋषी.

रंलियोरे ।। केम करीश कूं हूं रांकु ।। पाल्ने तब्नूं प्राण
आ माकरोरे ।। जयर नथी को उपाय ।। दास्य तोटो
णे करयां रे ।। गाल्नव गंगा तट लै ल्नया ।। काएपाव
क प्रगटियोरे ।। उठी आकरी प्रमाणे ऊभा ।। गा
ल्नवे त्यां उल्ना रहीरे ।। ल्नलिया श्री गोपाणा
णा सार करोनी राामणारे ।। तूं बिन नथि जील्ने
कोया ।। दुख्या कूलतेरे ।। दुरिनेत्र ल्नरीने रोया ।। ल
।। पड्वा ते तत्पर थयोरे ।। कास्य उपर घरियो
कृयि ।। अछे आथियारे ।। अंतरिक्ष थी वैकुंठना
था ।। ग्ला ।। कोकहां मरो महा मुनीरे ।। अेणिपेर जो
ल्या श्री ल्नगवानी ।। कृपा ल्नछो कहे मुनीरे ।। कामा
गी ल्यो वरदान ।। १० ।। गाल्नव जो लियारे ।। स्वा
मि आपो अगणित धंन ।। हूं तेणे करीने मलुरे ।।
आरंल्नूं कूरि यज्ञ ।। धा ।। ल्न धन आपियुंरे ।। अेणि
पेर जोल्या श्री ल्नुगदीश ।। रणियात रुही तव
त्हां थयारे ।। नाम्युं श्री हरीने शीश ।। पराा पछे
पृथ्वी मांह्य थीरे ।। दुरीने ल्नडुं अगणित धन्न
।। ते थी यज्ञ आरंलियोरे ।। कूरि तेड्या ते मुनिल
ल्ना ।। १३ ।। द्रव्य धणुं अरच्या थईरे ।। गाल्नव म-
नमांथी गर्व ।। याड्यछे कहां लेटसारे ।। तेतोकुं

थकि केश सर्वा॥४॥ ॥वलण॥ ॥
हूं थकि क्लेश सर्वथा॥ विचार करे मन अेटलेरे॥
अेवे पाताल केतूने तालकेतू॥ अंतरिक्षथी आ-
व्या तेटलेरे॥५॥ ॥कडवुं॥ ६ ठुं॥ ॥
राग लीमपणासी॥ ॥सतगुरु बोल्या हो
॥वाणि सुखदायक॥ सुंणने राजन कहो॥ कुं
कथायक॥ कूरि करी मंडपनी हो॥ ऊडी रचनायक
॥ऋषि यज्ञनो हो॥ कुं भक्ति मायक॥१॥ ॥
ढाण॥ ॥अंधकार किधो अंतरिक्षे॥ असुर
बन्यो आविया॥ गीरी तरुवर मांस शोणिता॥
माया करिने लाविया॥१॥ करी कोरण कुकडाट॥
रेणुं उडे ल्यय लील घणी॥ वापिला धि दसो दि
शा॥ माया किधी पोता तणी॥२॥ जेम तेम ऊठी
गया॥ ऋषी साध सौ न्हासी गया॥ किसा मूकि
गयो गालवा॥ यज्ञ वणि अमथो रह्यो॥३॥ मागी
त्रागी धन लाव्या॥ ब्राह्मण तेडया त्रिकवारे
॥मुनि मात्र सहू भणि जेश॥ शीघो अेक विचाररे
॥४॥ किसात केके लाई सांभलो॥ कांई करीत-
पासो आप॥ आ वार आवे अधर्मितो॥ सुभ
रूप देन्ने शाप॥५॥ वशीष्ठ वजतुं जोतिया, अेणे

ईश्वर आराध्या सही।। वरदान छे महादेवनुं।।
तेथी श्राप तो लागे नहिं।।३।। पछे विद्याये घन
गुप्त राख्युं।। यालतो कीधो होम।। देवता अतिह
र्षे पाम्या।। नव धूम्र आव्यो व्योम।।४।। पाता-
लकेतु नें तालकेतु, आव्या अंधारुं करी।। लय
पाम्या ब्राह्मण नाठा।। यज्ञ भंग हवो फरी।।५
।।वणि सर्व लूंटी गया पापी।।गालव अतिशे
कलकल्यो।। अेकवार पांचरुं नव फर्युं।। त्रण वार-
तो हूं आफळ्यो।।६।।देवने अर्थे यज्ञ मांड्यो।।
व्यम स्वर संतोषाय।। त्रण वार तो रेवणि थ-
यो।। अमरे न किधी स्हाय।।७।। पछे उदक अं
जळी कर लिधी।। स्हदी करीने रीस।। ओघटा
ण अमर गणनी।। श्रापुं कोटि तेत्रीस।।८।।
आकाश लगि अविलोकियुं।। क्रोध करी मुनि
वन्न।। देवताओने दुःख पमाडुं।। ने सर्वे इंद्रा
सन्न।।९।। अमरगण अंतरिक्ष आव्या।। कृ
शि अमारो शो वांक।। दैत्य दमे तो तेहने श्रापो।।
अमर रंक करे रांक।।१०।। गालव कहे सौ सांभ
ळो।। करो यज्ञनी स्हाय।। भंग थाशे तो हूं श्रापि
श।। आवी करो रक्षाय।।११।। सांभळीने सुर

रह्या ॥ ते अंतर मांहे थयां दुःखी ॥ जेह अश्व
आपी पोतानो ॥ कह्युं नारद थाओ तमो सुखी
॥ १२ ॥ कह्युं घटे ते कहावियूं ॥ नारद स्वर्गथी उ
तर्या ॥ अरे दिशे दुःख मृगो मननूं ॥ वेणा पाणि
उच्चर्या ॥ १३ ॥ अश्व मोकल्यो इंद्र राये ॥ लईन
आो अयोध्या मांहे ॥ शत्रूजित महा प्रेमण रा
ज्ञा ॥ राज करे छे तांहें ॥ १४ ॥ तेहने रितुध्वज कुंव
र भणियो ॥ पराक्रमि लीको घणो ॥ तेहने तु
रि आ आपजो ॥ तव यज्ञ थाशे तम तणो ॥
१५ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ पछे अश्व
आपी नारद वलिया ॥ तम तणो यज्ञ शोभशे
॥ गालव अति आनंद पाम्या ॥ हवे अयोध्या
तेवरीया ॥ १६ ॥ ॥ कडवुं ५ ॥ ॥ राग
रामग्री ॥ ॥ गालव आव्या अयो
ध्या गाम जी ॥ शीघ्र पहोंच्या रायने धाम जी ॥
शत्रूजिते दीधूं अति मान जी ॥ आसन आप्युं
परम निधान जी ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ ॥ आस
न आपिने पूजन कीधूं ॥ पछे पूछ्यो समाचार
॥ कहो स्वामि जी केम पधार्या ॥ साथे शो छे तोज
रा शा मूनि कहे हो महिपती ॥ छे तूज साथे काज ॥

अम्य लई हूं आवियो ॥ हवे मोकल्यो छे महारा-
जा ॥३॥ म्हें भिक्षा मागिने यज्ञ मांड्यो ॥ मूंनि
तेड्या सौ मंदिर ॥ पाताणकेतु ने तालकेतु ॥ रा-
क्षस जन्यो वीर ॥४॥ माया करि ते आविया ॥
म्हारा यज्ञनो कियो भंग ॥ पछे मुने म्हेवी छं-
ळा थई छे ॥ हवे करुं आलंग ॥५॥ म्हेवे अमरे
नारद मोकल्या ॥ आव्यो साथे अश्व ॥ कह्युं
के शत्रूजितने आपले ॥ तेथी थारो सर्व ॥६॥
माटे कहूं तमो महिपती ने ॥ रितुध्वज आपकु
मार ॥ आपो तेहने तेडी लेऊं ॥ अश्वे थशे अस-
वार ॥७॥ क्षेम कुशळ करि आंणि आपिश ॥
पाछो ताहरे घेर ॥ ना न कहेशो महिपती ॥ थाय
यालती पुन्यनी सेर ॥८॥ वचन सुणी नव विप्र
केरां ॥ राजाने लागी आग ॥ अतिसे मनमां खेद
पाम्यो ॥ गालव मणियो शाप ॥९॥ पछे सुत
सामुं निहाळियुं ॥ बोलि ऊठ्या महाराज ॥ ऋ-
षिजी शुं कहे छे ते सुण ॥ करि राखशो कांई का-
ज ॥ रितुध्वज तव जेठो थयो ॥ शुं करशे स्त्रीना
मा ॥ भाग्य होय तो आ अंग म्हारा ॥ करीने आवे
काम ॥११॥ चिंता न करशो तातज्या ॥ महा पूर्ण छे

ए अध्ययन।। अस्तूरने ऊगराडी नाख्युं।। कशावुं प
णतो यत्न।।१३।। पाये लाग्यो मातने।। तव मस्तक
मुक्योपाण।। महिपती कहे छे मुनी म्हारा।। लेजन-
ओछो प्राण।।१४।। रसा करजो ए हुनी।। छोत
मो श्री ऋषीराज।। विवाह कर्म कीधुं नथी।। जेटली
छे मुजने हाम।।१५।। अनंत मागां आपियां।। प-
ण न लीधुं कन्या दान।। पुत्र कहे परणुं प्रेमदा।।
जो होय मुज समान।।१६।। कहेवी तो को नामणि
।। रूप कळा गुण संपन्न।। तमो शीखामण अहे-
वी देजो मे।। विवाहनुं करे मन्न।।१७।। वळावीने
वळ्यो नृपति।। नीर तो नेणे ढाळी।। उलासकी
सोके जूवे।। राज पुत्रने वाळीवाळी।।१८।। आगा
लनव पंथे परवर्या।। जागण राजकुमारा।। जा
श्रमे जन्यो आविया।। अश्वे थै असवारा।।१९।।
।। हरि यज्ञ आरंभियो।। करस्युं अंतःकरण।। द-
शो दिशाजे मोकल्या।। ऋषीयोने निमंत्रण।।
२०।। ब्राह्मण सर्वे आविया।। राजपुत्रे कर्यो न
मस्कार।। मुनि मन जहु आनंदिया।। त्यां वर-
त्यो जयजयकार।।२१।। ।।वलण।। ।।
वरत्यो जयजयकारने।। ऋषी सर्वे साथे लागेरे

॥साद सांभळि आविया जे॥ रितुध्वज तेहने कय
म कर्णे रे॥ २४॥ ॥कडवुं ८ मुं॥ ॥राग
रामग्रीनी देशी॥ ॥वेदाध्ययन ध्वनि मयी
कुटी थी॥ शब्द थाय अघोर रे॥ स्वाहा शब्दे
आविया ते॥ कर्युं अंधारुं घोर रे॥१॥ अंधकार
ऊपन्यो अंतरीक्षे॥ तव जण लाग्या ऋषि बाळा॥
केम हता ते त्यम नाठा॥ रह्यां रांध्यां अन्न॥
२॥ साद करी सौ बोलाव्या ने॥ कह्युं पछे रितुध्व
ज॥ बीहीशो मां आ ऋषि भेळो थयो॥ धनुष कु
र्युं मम सज्ज॥३॥ गालव कहे तमे जोयी राक्षसो
॥मुने थायछे उत्पात॥ मिथ्या ऋषियोने बीहा
वो॥ सहुजण लागे वाट॥४॥ राजपुत्र कहे स्वा-
मिजी॥ ए राक्षस आवे जदा॥ एकलो हुं सौने
मारुं॥ न मागुं कोईनो पक्ष॥ पण तो जे जेनो शो
आशरो॥ ने आपुं गुंदी पाक॥५॥ राहुं अंतरिक्ष
मार्गे॥ अवनि यडावूं चाक॥६॥ एवुं कही गर-
जना कीधी॥ अश्व थई असवार॥ हाथ मांहे चां
प लीधूं॥ कीधूं मंडाकार॥७॥ अमरे वाजि मो
कल्यो॥ अंग अति ऊजळपण॥ ते ऊपर आरूढ
थयो तवा॥ आव्यूं ऊंघनुं जण॥८॥ रितुध्वज थ-

थो रक्त वर्णो ॥ अंगुटी अढावी लाल ॥ आंगणनुं
कीधूं छापरुं ॥ नें बांधी करती पाल ॥ ८॥ गीरी तरु
वर मांस शोणित ॥ वरसावे करी माया ॥ ने नेनां
जे आहरी ते ॥ कहां गडगडि पाड्यां ॥ ९॥ अहारे
शम थोडी करी ॥ राय पाडतो रूंढा ॥ वाल आव्या पा
षाणना जी ॥ अड्यो जेहने थाक ॥ १०॥ आदर आ
णी लणे ब्राह्मण ॥ लडकी रह्यां छे मन्न ॥ सभ्या प
डे शीर अन्न उपर ॥ तेथि उघरके मुनिजन्न ॥ ११॥
सामग्री सकु हाथ मांहें ॥ मुनि करे न्हासान्हासा ॥
टोळेटोळां रह्यां उला, भरता निश्वास ॥ १२॥ पा
षाण पडे मंडप मध्ये ॥ न्हां होय आछां जाणा ॥ जर
कापाडी उठे ब्राह्मण ॥ थर थर धृजे प्राण ॥ १३॥ प
रवतनो वरसात वरसे ॥ सर्पडानी डोटा ॥ थयुं
अंधारुं अतिघणुं ॥ न्हां धूम्र गोटा गोट ॥ १४॥
ब्राह्मण सरवे पड्या भूला ॥ करे मांहो मांह्य पुकार ॥
हांक सांभळि नव रोके ॥ कानें पड्या घाक ॥ १५॥ को
रके शिक्षा रायने ॥ वीर सांभळ कहुं जरा ॥ कांकरे वा
गवे थरी कणुं ॥ नीर नव रहेसे लगु ॥ १६॥ ओकउ-
के रुं राजरीशा ॥ शाल रितुष्ठना ॥ छापरा मांह्य छिद्र
दीसे ॥ अन्हारा आंजमा पडि रत्ना ॥ १७॥ पाषाणने

प्रकारे आंण लागो नीसरे मोटा गडो॥ नवकरुन
शिना माथामां वागो॥ तव पंपाणि पाडे अक्षोहि
॥२॥ अनी रितुध्वज हमनो॥ नहिं तो देतं शापा॥ अ
धर्मि साथे चाले नहिंनो॥ राङने दाअवे तापा॥२०॥
॥ ॥ढाळ॥ ॥घयन सांभळि कुशीकेरां
॥ क्रोधे करुयो तूपाणरे॥ सतगुरु कहे शुभभलुं
णो॥ पछे शुं वरत्युं ते जाणरे॥२१॥ ॥कडवुं॥
२३॥ ॥राग सामेरीनी देशी॥ ॥रितुध्वज
रणमां गाज्योरे॥ वासवनी पेरे विराज्योरे
॥ जाधनुष लई आफरस्युंरे॥ ते रुप अमरे नर
ख्युंरे॥१॥ ॥ढाळ॥ ॥देखि रुप ते दैत्य
केरु॥ पापी मुंजे गडगड्या॥ मायावे मन्डप उप
रा॥ आकाशथी आवी पड्या॥२॥ शरजाण सर्व
स्थळ किंधी॥ कडकड्या मंडप स्थंभा॥ दशो दिशा प
छी आवरी॥ घोर घोर करे अहंम्भा॥३॥ राजकुं
वरे क्रोध कीधो॥ लिधां मोटां बाण॥ सन्दनो
राक्षस तालकेतु॥ ते उपर कीधुं संधाण॥४॥
असुर आव्यो राय सामों॥ कहावीने ग्रस्या॥
स्थुळ शरिर पोतानुं किधुं॥ हाथमां लीधुं ग्रस्सा॥ पे
॥ असुरे अंतर्वई धूम्र नाख्यां॥ पछे पाडी चीस

॥ रीतुध्वजे तव जाण मारी ॥ कीधा कटका वीसा ॥ ३ ॥
वळि अधर्मि ऊछळ्यो ॥ लाव्यो अेक सन्यायो ॥
तिल प्रमाणे कीधा कटका ॥ तव गालव मकलाया ॥
४ ॥ असुर ज्यारे ओसरे ॥ थिर जाण वेंधे गात्र
॥ हेकार करि करजे कृषीजी ॥ वगाडि तुंजी पात्र ॥ ५
॥ श्री रामजीनी कृपा थकी ॥ कडाट गगनने मांहे
॥ तव मुनियो मरडे त्राटी ॥ नासा नासकरे मांहे
मांहे ॥ ६ ॥ यज्ञ राखी रंगुं शके ॥ गालवे जाण्युं क्ष-
त्रुं छेयुं ॥ सामग्री लेवाने आव्या ॥ कृशि कुटे शि-
शने कैयुं ॥ ७ ॥ राज रान राज राजना ॥ शुं रह्यो क-
ढावी चापा ॥ जेजंन थारो अेक कोडिजुं ॥ तो तुने दे-
शुं रापा ॥ ८ ॥ शरीरसे रीतुध्वज रातडो ॥ त्रगुटी क-
ढावी लाण ॥ सतस्क रत्र जाणो मुक्रियां ॥ पूर्ण
जाणी काण ॥ ९ ॥ अर्धचंद्र सम मुक्रियुं ॥ राज
प्रतापी जाण ॥ ते तालकेतुनें हृदये वाग्युं ॥ तत-
क्षण निसर्या प्राण ॥ १० ॥ पड्यो पृथ्वीये प्राणक्ष-
णे ॥ जाणे करी व्याकुळ थयो ॥ तव पाताळकेतु विमे-
थई ॥ ने रणतजी नासी गयो ॥ ११ ॥ रण मूकीजं-
तरियाण नाठो ॥ कृशीकरे जयजयकारा ॥ रितुध्व-
जे तव पूर लीधी ॥ प्रेरियो तोखार ॥ १२ ॥ आग

पळ जतां असुर थाक्यो॥ पाम्यो अंतरध्यान॥ रितु
ध्वज तव फरी आव्यो॥ मळ्या मुनि भगवान॥२८॥
ऋषि कहे भिल्लने मारिने॥ शुं रितुध्वज आव्यो अहीं
कुंवर कहे कुं घणुं धायो॥ पण जतां दीठो ए नहीं॥
२९॥ गालव य पळतूं जोलिया, त्यारे दिसानूं रंकुरूप
मा आकृणिये जे अश्वत्यारो॥ जोणीकुंडरे ठाम
॥३०॥ आ दहलोक विशे जे ज्वा॥ समर्थ छे तो जा॥३१॥
कुंवर कहे कुं पुरुष भिल्लो जेउं॥ केम आवे जीतवा
॥३२॥ एवुं कहीने जग मांड्यो॥ जे कथा एटले
थी रही॥ पाताळकेतु गयो न्हासी॥ वळती शुं कर
तो ते सही॥३३॥ त्रास पाम्यो ने स्वारस कहियो
॥ नैणे नीर नीरधारा॥ विलाप करतो विरना॥ कहे
क्यां मळशे युद्ध करनारा॥३४॥ हिमाचळे आवी
रह्यो॥ करतो रुदननो नाद॥ एहवे अशोक वन
क्यां हिंडु॥ सांभळ्यो स्त्रीनो साद॥३५॥ ॥
वळणु॥ ॥सांभळ्यो साद सुंदरी केरो॥ था
य संगीत गानरे॥ विलाप विसरी विरनो॥ वा
डी भणी दिधा कानरे॥३६॥ ॥कडवुं॥१०मुं
॥ ॥राग छंद हरिगितनी चाल॥ ॥वि
श्वावसु गांधर्वनी कुंवरी॥ मदालसा शुभनामे

॥रूप ललित विलक्षणी॥भानुनी तेजनुं धामरे॥
२॥जलजे लिते सोहलि साथे॥मालती ग्रहि हा
थेरे॥जरी गेह वाडीमांह्य नित्ये॥गाय स्त्रिनोसाथरे
॥३॥शोलित वन्न पवन्न शीतळ॥वायु वाहे मंदनो
घुम्र वेलि नथी जेली,॥सुरिपु जे दिन दुःजनो॥४॥
द्राक्षना छे लक्ष छोडो॥छोड नियायंपातण॥मोग
रा मणियागरा रुल॥जाति जाति वृक्षो घणा॥५॥
थाय अति आनंद त्यांतो॥सजण स्त्रीनो सादरे॥
कोयेल मोरने जुलजुलोथी॥थतां मधुरा नादरे॥पग
थैकार थनथन अपसरा॥पगउंग्यलि घुघर वजाड
ती॥गाय हरिगित हरीलई थिता॥अंग अनंग जगा
वती॥६॥मधुरि वाणी सूर तांणी॥तानमान जणा
वती॥के जेक रसना स्वाद लेती॥हाव लाव वजाएन
ती॥७॥मृदंग चंग उपंग रंगो॥नविन नीत जमावती
राणि रीते रसे लींनोगान करती लावती॥८॥केश
रगुंथी जिणे तारा॥कुंडमां आरोपती॥कोजाणीवे
शे छुटे केश॥कटि मेजळे शोलावती॥७॥अमृत
वेणी मृगा नेणी॥अंजन आंके कामनी॥नायतां
आनंद जाणी॥निरमण मिर नव निद्धनी॥१०॥
संघाण जाण कटाक्ष करतां॥अमर नहि मोह्यरे॥

ચીત્રનંબર ૩ જો.

અશોકવાડી વિષ્ણુસુધાની.



वदन इंदू मांह्य बींदु ॥ शृंगार शुभरति सोहियेरे ॥१४

पण पर्ण ते धर्ण धरतां ॥ आवि लावे हृण हारने ॥

हथियार बांधि करे करसे ॥ सजण लावी लेरने ॥

रशा ॥ अस बोल बोले ढोलवागे ॥ निसाण आण शुडि

करे ॥ हाथमां जेडा करे तेडा ॥ वन मांह्य लयको नव

धरे ॥५॥ ॥वलण॥ ॥करती खेम मृदा-

लशा ॥ साथे वनमां सुंदरी रे ॥ मृदालशाने निरख

तां ॥ लाईने गयो वीसरी रे ॥१॥ ॥कडवुं ॥१४

मुं ॥ ॥राग मारुनी ब्योपार्छ॥ ॥मोह्यो

मोह्यो अ लुतरंगे ॥ त्यारे अनंग वाध्यो अंगे ॥ टे

॥ मोह्यो मोह्यो नौतम नाह ॥ दीठी नार ते करतां वाह

॥१॥ जागण मरडे अंग अलबेली ॥ राणी अेक छे

सो साहेली ॥२॥ गयो दानव प्रेमदा पास ॥ लेवा

लाग्यो अती उल्लासे ॥३॥ त्यारे नृप लुवंतीनूं

लेयुं ॥ त्हारे मोह आणे मन प्रोयुं ॥४॥ द्रुम वलीने

ओथे रेतो ॥ देखी देखी दानव म्होतो ॥५॥ दीठी मृ

दालसा लरी महनी ॥ अलोकीक छे शशी वदनी ॥६॥

इंदु आदीत्य बे रह्या ऋणका ॥ अणगी रहीछे गोरे घाट

ल्केका ॥७॥ लकेमां नड्यां माणेकने मोती ॥ नाके मोरथी

शामा स्होती ॥८॥ छे अधर बीम्ब परवाळी ॥ ते

पर येसर वाळी, आंत कराणे रंगे रंग्या वणी ॥ शोभा
अेहवी नौतम भणी ॥ ४ ॥ जेवो चतुर्थिनो चंद्रमाय ॥
तेहवी कपाळनी शोभाय ॥ ४२ ॥ हार कंठे हियें मोतीनो
॥ जणकाय नवल त्रोटीनो ॥ ४३ ॥ सेंथे गूंथ्या वकरे भ्रम
रा ॥ श्रोवण केरनुं नित्तुं अंबर ॥ ४४ ॥ काणा केश त-
णो अंबोडो ॥ जाणे धुंधट तेह घोडो ॥ ४५ ॥ आंख
ऊपर अलकावळी ॥ जुगम स्तन जाणे कुलकळी ॥ ४६
॥ अती अणि आळी आंजली ॥ जाणे पंकजनी पां
खडली ॥ ४७ ॥ शरीर रेखरी समुं अंजना ॥ कोमळ गाले
भज्यां अंजना ॥ ४८ ॥ राती रेखने कीकी काळी ॥ जूवे
छे जेम मृगली व्याळी ॥ ४९ ॥ भृकुटी जन्यो भमरऊड
सरखी ॥ जोनी नेत्र कमळने नरखी ॥ ५० ॥ कंठ कपोलने
आकारे ॥ ते शोभी रह्यो शृंगारे ॥ ५१ ॥ ऊर मन्ड
ण मांहें हारा ॥ तेना मूल तणो नहीं पार ॥ ५२ ॥ कटीपा
तळी मेखळे शोभे ॥ जेनां महा मुनिना मन लो-
भे ॥ ५३ ॥ कंकणी कर मांहें फेरी ॥ कोंचे मणी रह्यो
लपकेरी ॥ ५४ ॥ हथेळी छे अंबुज वरणी ॥ देखे तन
ऊपर तरुणी ॥ ५५ ॥ चरणे झांझर केरो झमको ॥ नेपुर अ
णवट केरो ठमको ॥ ५६ ॥ छे पंकज वरणी पानी ॥ राती
रेखा जाणे नी कानी ॥ ५७ ॥ छोटा मानम भगनी कटी

॥ तेवी जाणानी आंगणी॥ रत्नाकर वातो नवनवी भीडी॥ तेवी देते दारा दीडी॥ रत्नापोतिको कर जड डावे गाले॥ हस्ती मोरनां मोती हाले॥३०॥ जोढ- णि ओढी अंजर पर जाछी॥ तेतो पवनें डोडे छे पा- छी॥३१॥ जेवी पूर्ण रूप लेजन्न॥ हरनीस रहे छे त वन्न॥३२॥ तारा मांहे जेवो शशी॥ तेवुं वदन र- ह्युं छे हशी॥३३॥ जासन्न पाथर्यो रंगी बेरंगी॥ त- डीये बेठी छे जाजा अंगी॥३४॥ चित्रवत देत तां तो जटकियो॥ स्काभूं लाणीनव ते शाकियो॥३५॥ असुर अंतर मांहे वीचारे॥ स्वर वर्गको जाने स्वी कारे॥३६॥ नेणे पुन्या सारंग पाणि॥ तेने होसे ज धणियाणी॥३७॥ शेष कहाये नलयवरणी॥ पु छूं कुंवारि के परणी॥३८॥ जेतो जपणा होये माह री॥ परपंचथी लई लउं हरी॥३९॥ पणिने जट गृहस्थ कुं थाउं॥ वेगे लैने स्थानक लउं॥४०॥ जेवी दुष्टनी दुर्मती धाठी॥ विसर्यो मर्णने पाम्यो लाठी॥४१॥ धर्यो लभरा केरो वेश॥ थयो नीपट कानो नेश॥४२॥ जपणा कंठ कुशमनो हार॥ ते पर मांड्यो जती गुंजार॥४३॥ डीर उपर जावी नेबेसो॥ जने कंमुदि मांहे पेसो॥४४॥ गणग-

एने मोटुं मंगलाये॥ मृगालेखा जिनें गेली थाये
॥४५॥ सजिने करे कौतिक नूजो॥ भ्रमरो ख्याले
पड्योछे मूंजो॥४६॥ मुख गळस्थळ ऊपर लमे
॥ देत राजकुंवरिने दमे॥४७॥ पंच पंच आयुद्ध धारि
॥४८॥ करे पांचसो नारी॥४९॥ नहीं छोडी राज
कुंवरी॥ नव पामे जवाने करी॥५०॥ त्यारे आ
जनकेडां आवी रह्यो॥ स्थूण शरिरे त्रांते थयो॥
५१॥ पछे सहसा कर्म त्यां कीधुं॥ प्रौढ काया देतपणउं
लीधूं॥५२॥ शरिर पोतिकुं तेवधारी॥ आसन लहि
त उंचली नारी॥५३॥ लई ऊड्यो पछें आकाश
॥ धाई पूठळ पांचसो दास॥५४॥ मारो मारो जेम
कहेती चली॥ पण पापीने फोंची नणवी॥५५॥
कहाडी झळकती तरवार॥ नारी करेछे मारामार॥
५६॥ कोइ धनूष करे संधांण॥ मूके तिख्र ताणिने बाण
॥५७॥ अरे राजकुंवरिने कोणे लीधा॥ हरीवहनी
नूं कर्णक कीधा॥५८॥ यानो गान्धर्व लोकमां लैयो॥
जेना मात पिताने कहिये॥५९॥ नहिं दीसे गयान
नूं स्थान॥ देखतां पाम्यो अंतरधान॥६०॥ जोवा
ई कन्या काली॥ घेर कहेवा सरवे चाली॥६१॥ आ
व्या थै ओसियाळी॥ आपणने सोंपी हती संला

पीा।८१।। हवे ऊत्तर शो देवारो ।। समाचार के मड़ुते
वाशो ।।८२।। ऊंघाटे त्यां आव्यां घेरा पण केहेवाय
नहीं ते पेरा ।।८३।। पछे माताने जेम पूछो ।। तमो जन
मान्या जे शुं छो ।।८४।। क्यां गई कुंवरी म्हारी ।। नेपर
चंद्रमा नाऊं ओवारी ।।८५।। ह्याडी आगळथी ते
आवे ।। म्हारे आंगणीयूं ते सोहावे ।।८६।। म्हारा
प्राणतणो आधारा ।। तेने ते रीलागी धारा ।।८७।।
केको कुंवरी गयूं मुककरी ।। अथवा गई ते सत मरी ।।
८८।। रोतो जोत्यो सखीनो साथा ।। त्यांय पडिया ह-
मारा हाथ ।।८९।। हमो जे झंघे नव लह्यूं ।। को कन्या-
ने हरी गयूं ।।७०।। वचन वयन ओहेवां सांभळी ।।
माबापने मुरछा वळी ।।७१।। पछे रोतां नरने ना
री ।। दीकरीना गुण संभारी ।।७२।। रोतां मातपी-
ता ने ई साथ ।। सर्व नेणे करे अश्रुपात ।।७३।। वि
श्वावसु सोधन करतो ।। पीता ठामे ठाम संचरतो
।।७४।। ।।चणण।। ।। सांचर्यो ते सोध कर
तो ।। पण पुत्री जोणी नवनडी रे ।। जे कथा जेटले
थी रही ।। हावे कन्या कहुं ते पेरे पडी रे ।।७५।। ।।
कडवुं ।। १ मुं ।। ।। राग सोरठनी देशी ।। ।।
आसन लीधुं ऊंचलीरे ।। दैतछे महा विकराळ ।।

कही तव ते मृगालेखा॥ पडि पेटडियामां झाळा॥४॥
मुझ सुने तुं राक्षसा॥ हूं लागुं त्हारे पाय॥ पिता-
जी जोशे वाटडी रे॥ मरशे म्हारी माय॥ ५॥ आप
तमारी आणकी रे॥ आल लुंटाणे अंतरियाण॥
आ पापि हाथ चडी अरे रे॥ हवें कुरमजने गाळ॥६
॥ सखी माताने नहि कह्यो रे॥ मुज दुःख न धरशो रेखाण
लावि पहारथ टणे नहीं रे॥ मुज कर्म तणे रे अ॥७
॥ जेम टळवळती तारुणी रे॥ क्यांथि दुष्ट द्रेमां हा
या॥ विलक्षण वदन करी॥ मोक पोकारे॥ कै नैणे नीर प्रवा
हा॥८॥ मृगलिने मुजमां धरी॥ जेम व्याघ्र नासे
वन्न॥ तेम ते लीधी मृगालेखा रे॥ आरत अकर
रति रुदन्न॥९॥ जेम प्रसवतां पोपटी रे॥ ग्रही त्या-
ले मंजारा॥ तेम लीधी ते मृगालेखाने, नव धोंयी
भूमइ क्यार॥१०॥ अंतरिक्ष चाल्यो मन धरी रे॥
अति घणो अहं मेघ॥ जेवे वाट मध्ये मल्या
रे॥११॥ उमया सहित महादेव॥ पार्वतीये सां
भल्युं रे॥ ह्रो आणकी पडि अंधन्न॥ सुणवो मह
देवजी रे॥ तेथी आफो थाय प्रसन्न॥१२॥ वचन त्रंब
घा महादेवजी॥ नारी नारीनी करे क्यार॥ दया
आवे तो मारि हैत [illegible] जापो आजणाने आंधा

राग॥तव ऊमयाजी जेम ओम्यर्या॥जे कन्या-
नो हरनार॥रे जे पापीने मारशे रे॥ते हशे तु
ज लनस्थ्यार॥१०॥ रोईशना तुं मृदालसा॥जे
म माता बोल्यां वाण॥ अमर सेन्य सुतसु
त जेरे रे॥ ग्रेहशे त्हारो पाण॥११॥ दामनी
ते प्रीछी गई रे॥ नव पापी प्रीछ्यो पेर॥ पाता
ळ पांचमे लई गयो रे॥ त्यां हतुं पोताजूं घेर
॥१३॥ ॥वलण॥ ॥आव्यो घेर पोता
तणे॥ लाव्यो नारी रतन्नरे॥ अन्य को ल्हां नव
मणे॥ केम ऊगरे ते स्त्रि जन्नरे॥१४॥ ॥

कडवुं॥१३ मुं॥ ॥राग रामग्रीनी देशी॥ ॥

वैसम पायन बोल्या वाणी जी॥ जनमे जय हर्ण
करीने जाणी जी॥ मंदिर मां छे सुन्यकार जी॥ न
मणे त्रीजनुं तेणे ठार जी॥१॥ ॥ढाळ॥ ॥
ते ठार त्रीजनूं नव मणे॥ ने करे आवी वात॥ मृदा
लशा जेकुली घरमां॥ करे अश्रुपात॥२॥ अरे क
रमडा शुं कर्युं॥ म्हें कोण कीधां पाप॥ आ स्थान
क आवी पडी॥ मुक्यां माने बाप॥३॥ नव देतव
ण तुं बोलियो॥ कह्यो क्हां करो कृतन्न॥ सुपन्ल्हां
नां विघ लोगवो॥ लावतां करि लोजन्न॥४॥

પટકુળ પ્હેરો પદ્મની॥ ચરણિ સોળિતા શૃંગાર॥ પુ
ર્વ જન્મ પુન્યે કરી॥ હું સાંપડ્યો ભરથાર॥૫॥ પા
રોઢ મુજો સુંદરી॥ કરમાં ગ્રહી વરમાળ॥ હાથ
આલી માહરા ને॥ કરો આજ અમાણ॥૬॥ સ્વર્ગ
સુખથી અધિક છે॥ અને આણરો વિવેક॥ તો ભો
ગ ભોગવશો ભામની॥ મ્હારિ સંગ રંગ અનેક
॥૭॥ જરા ન આવે તુજને॥ નાગરસ કરાવું પાન
॥ અંજન રેહેશે સદા લગી॥ વાધશે અતિશે વાન॥
૮॥ આલોચન જુવો ભામની॥ ભાસ્કર કરતા આ
સ॥ ધન્ય ભાગ્ય જે વસે એહેણે॥ પુન્ય હોય અવિ
નાશ॥૯॥ ભાજનમાન્યા સાકારણે છો॥ બોલો મુ
ખીને લાજ॥ પરણો મુજને પ્રેમદા॥ સરે સઘળાં
કાજ॥૧૦॥ મદાલસા એમ જોય રે॥ મનમાં કરીને
વિચાર॥ પરણ્યાનો પરપંચ કરું॥ એ મતે મલગા
ડી વાર॥૧૧॥ વચન કહે પાર્વતી કેરું॥ તેણે આપ્યું
છે વરદાન॥ જે પાપીને મારનારો॥ તે આવશે
અણધાર્યો॥૧૨॥ એવી રીતે મન વિચારી॥ મુખ
કર્યું આનંદ॥ હસિત દીઠી મદાલસા॥ તવ પડ્યો
માયા ફંદ॥૧૩॥ વિનય યુક્ત તે બોલી॥ નહિં છીતા
વળનું કાજ॥ ઠામિઠ કિ વિવાહ કરો॥ કહું કર આલીશ

આવ્યા ॥૪॥ દુ:ખ તેડો તમ તણું ॥ દોઈયે મુનેં નથિ દિઠી ॥ગીત ગાયે કામની આપણને ચોળીપીઠી ॥૫॥ સજ્જન કેરૂં નામ લીધું ॥ સાંભર્યો ત્યારે ત્યા ઈ ॥ ઉઠ્યો કહીને આવિયો, નળ થકી આંખે લરા ઈ ॥૬॥ જ્ઞાન વિચારે તેહનૂં ॥ દુઃખ લાગ્યૂં અતિ ઘેરા ॥ રિતુધ્વજ મ્હારે મારવો ॥ વાળવૂં ત્યાંઈનું વેર ॥૭॥ ગાન્ધવનો નઈ યત્ન લાગ્યું ॥ રિતુધ્વજને નાખૂં મારી ॥ દુઃખ લાગે મન તણી ॥ પછેં પરણું નૌતમ નારી ॥૮॥ એ કહ્યું સાની દીકરી ॥ વિદ્યુ લ્લા છે નામ ॥ ધ્યાન ધરિયું તેહનું ॥ તવ આવી તેણે ઠામ ॥૯॥ કર જોડીને વિનવે ॥ કન્યા કહે મહારાજ ॥ આવેણ મુને કેમ સંભારી ॥ શું છે સ્વામિકાજ ॥૧૦॥ અસુર કહે તું મૃણાલશાને ॥ સામ્ય રહિ તેપાસ ॥ એટલે કું રિતુધ્વજનો ॥ કરતો આવું નાશ ॥૧૧॥ ત્યાંઈ પડ્યો લોમી ઊપર, નથી દિધૂં કહેને દહેન ॥ કહો કેમ પરણૂં પ્રેમદા ॥ તૂં સાંભળ મ્હારી બહેન ॥૧૨॥ મૃણાલશા કહે સુઃખે આ ॥ વેગે પધારો સ્વામિન્ ॥ હું તમથી નથી વેગળી ॥ હાવે થઈ છું તમ આધિન ॥૧૩॥ ॥વળણ॥ ॥

આધિન થઈ છૂં તમ તણે ॥ તવ પાપી ત્યાંથી પર

वरेरे।। विप्र प्रेमानंद जेम लणे।। पछे यज्ञ ऋषीऋ
षि पेर करेरे।। २७।। ।।ढ्वुं।।१४ मुं।। ।।
राग धवल धन्यासीनी देसी।। ।।नारद कहे मु
नि जेम जोयरे।। सुणो युधिष्टर राय के।। रक्त
रितुध्वज त्यां डीलो छे।। यज्ञ ऋषि पेर थाय के।।१
।।धनुष टंणकार व कुंवर करे छे।। नीगम नानीनघो
ष के।। लणे ब्राह्मण लाठ पड्यो न्हेठ।। पापिने य
ढियो रोष के।।२।। लोभन करता विप्रो आव्या।।
गंगा त्रटेथी अंघोळी के।। हतूं तेमनुं तेम देखीने।
।।दैत्यने लागी होळी के।।३।। रीतुध्वजने तालकेतुने
मारयो।। ते विप्र करता विजाण के।। कुंवर कहे भि-
ल्लने हणवा।। मुक्युं कहावी बाण के।।४।। वच-
चन सुणीने दानव बोल्यो।। मुख्ये करी होकार
के।। यज्ञ विषे जाविने पडियो।। आवरियुं अं-
धकार के।।५।। ब्राह्मण लोभन करता।। ल
यों मुकी लोचन के।। रितुध्वज धारीने राखे।।
जेम रह्यो मुनि जन के।।६।। विधू तारस्त्र ले बाण
न मूकी।। माया सघळी कापी के।। अंधारे अज्वा
ळुं कीधुं।। ते नीरखो कीधो पापी के।।७।। अंकुशा
सन तनुं वृक्षन ह्मोटुं।। ते दैत्य लाव्यो उपाडी के।।

रीतुध्वज ऊपर तेनाख्युं ।। माथा ऊपर लमाडी
जी ।।२१।। कुंवरे तव आगल मेहल्युं ।। चूकी
धो तीन मात्र जी ।। पछे सरदार ताणीने मुक्युं ।।
विंध्युं दैतनुं गात्र जी ।। आटोप पड्यो ने अजत
रङ्गा रह्युं ।। पड्यां सरव आयूध जी ।। न्हाठो दानव
चरण मूकीने ।। न स्हेवायु युद्ध जी ।।२०।। शर
न्हाख्युं धनुष ऊपरने ।। मारवा जेडी मूठ जी ।।
पगलुं ते पापीनुं देखी ।। अश्व हांक्यो पूठ जी ।।
२१।। पाखरियो ते पवनवेगी ।। दैव तणो आपे-
लो जी ।। पातालकेतूनी पूठे धायो ।। न्हाणे पाणी-
नो रेलो जी ।।२२।। माया वे मरडातो चाले ।। ज्यां
होय अघोर पंथ जी ।। ज्यां असुर त्यां अश्व हीं
डे छे ।। आथडे नहि अंध जी ।।२३।। थर थर ध्रुजे कां
छे नव सूझे ।। मुःखे स्वास न माय जी ।। ज्युं वच-
णीने पडे हणीने ।। ऊलट उठी ऊलो थाय जी ।।२४
।। मारुं तो हवे एम विमासे ।। देखि आणने काया
कांपे जी ।। थाक्यो शरीरे स्थुण थयो रे ।। रथ घोडे
न्हां आवे जी ।।२५।। रीतुध्वज होकारा करतो ।।
धाय अश्व ऊपरथी जेठो जी ।। न्हेवे प्रथ्वी लहि
पाडु प्रहारे ।। पापी पाताळे पेठो जी ।।२६।। आ

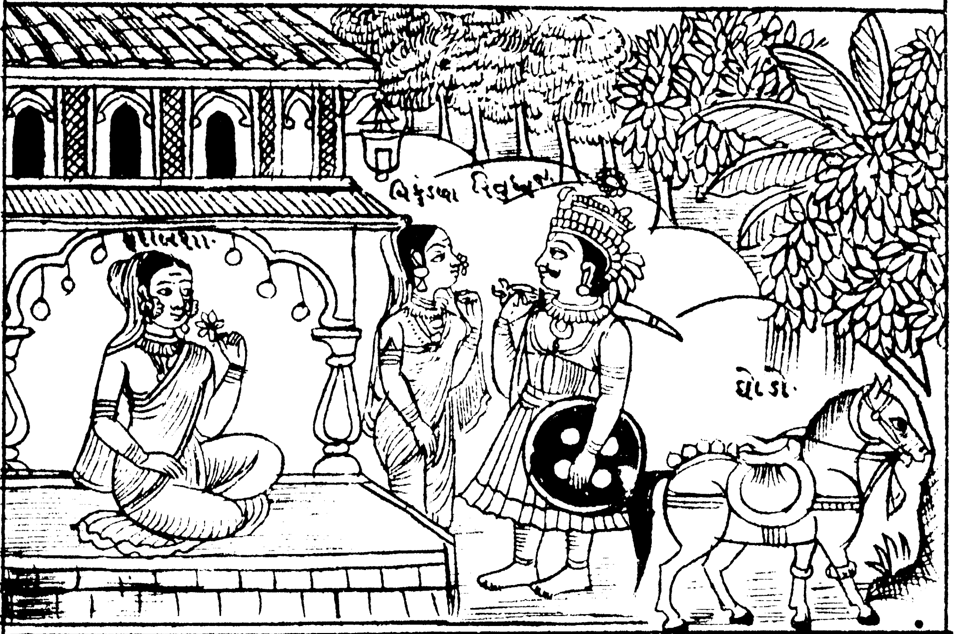
गण वण अगाध आव्युं।। मांहीं दैत परवरियो
जी।। तव लेपापात कर्युं घोडायो।। रायने लईने
तरियो जी।।१७।। फाएा पूंठण गङ्गा ग्रेहेवरा अ
नंत नदीने नाळां जी।। तेमां रितुध्वज घालो हिं
डो।। त्यां मनुष नहींडे पाणा जी।।१८।। अतण
चितण तणातण सुतण।। आव्यो चोथे पाताळ
जी।। दैते लइथुं ने घेर लईश तो।। कुन्यालेरी लु
पाळ जी।।१९।। ।।वळण।। ।।लुपाळ
लेरी स्वामनीने।। ते चिंता चितमां थई रे।।
अंतरधान थयो ते त्यांथी।। रसातळ जे गोल
ईरे।।२०।। ।।कडवुं।।७मुं।। ।।राग वे
राडीनी देशी।। ।।अंतरधान थयो असु
रते।। लई जे गो रसातळ।। रितुध्वज मनमांवि
मासे।। ने अश्व याल्यो सुतणा।।१।। लूव्यो वाट
ऊीयार थयो।। लुलामणे पड्यो लंभ।। वनमां
वाट नहीं वाळ जे।। लेवानो नहिं अनुक्रम।।२।।
दशो दिशे।। लुवे छे आकळो।। तव गलशायो राय
।। जेटले अश्वने ज्ञान थयुं।। ते मृगालशी लणि
त्या।।३।। राय घोडाने घणुं जोर्कु जेयो।। पण मेहि
रलणि भरडाया।। रीस करीने याजक मारे।। तव

लोचन रातां थाय ॥३॥ अग्ध कह्युं तो करे नहीं
॥ मन न्यवा हैतने घेर ॥ राये जाण्युं ने करां लय
लेउं ॥ रीस थाय छे पेर ॥४॥ मन पोतानुं दृढ क-
रीने ॥ छूटि मूकि वाजनी वाग ॥ अश्व चाल्यो
दानवने मंदिर ॥ चपळ चलाची पाग ॥५॥ आ-
वे जळ रहित अेक स्थान आव्युं ॥ देअर छे तू अ-
ति रम्य ॥ ते मध्ये पाधरो जई पेठो ॥ घोडाने
ते छे गम्य ॥६॥ धुम्र वेलीनुं अरीठ वन छे ॥
तेनी शोभा छे घणी ॥ ठाम ठाम अजवाळां दी-
जे ॥ मुक्या छे नाग तणा मणी ॥७॥ ते मध्ये
अेक सरोवर सुंदर ॥ निर्मळ जळ त्यां दीठुं ॥ पाळे पा-
ळे तरुवर शोभ्यां ॥ बावना चंदन श्रेके ॥९॥ रा-
जकुंवर अति हर्ष पाम्यो ॥ पीधुं शीतळ जळ ॥
ते मूकीने आगळ चाल्यो ॥ अेक आव्युं दारुण
स्थळ ॥१०॥ ते देखी नृपत भय पाम्यो ॥ पड्या
दीठा छे सकु बंध ॥ कीट पतंगने मांस शोणित
॥ त्यां वायु आवे दुर्गंध ॥११॥ त्यम अकरम ने
पद मस्तक ॥ अर्ध करडेलां पड्यां ॥ रितुध्वज
विस्मे थयो ॥ शुं प्रलय काळ थयो कहां ॥१२॥
दारुण घाट दिसे कशो को ॥ हैत कशो वास ॥ अ-

अध पुछियेजे कुं जहीं आव्योााहवे वध्यानी रीत आ
शाा४३ाारे निव शिव तुन राजण क्षरोााआव्युं अं
तरज्ञानाा ओवुं कहीने घोडे जे च्योाासमस्या श्री
लगवानाा२४ाा आगण नतां मंदिर आव्युंााकुन
क तणो छे कोटाा महामनोहर देखिनेाा अश्वनेम
रावी डेराीपाा माणियां मुल नणियांाा अटारी
त्हां शोलेाा सूंदर थोक परमाण पटमहााा नतां
मां मनडुं लोलेाा५ज्ञाा नतकार कझुंभे नगीाारा
घटि रमणीक दीसेााहिराने आणेक मोतीाानतां
मनडुं हीसेाा६ज्ञाा ाावलणाा ााहिसे
मनडूं अवि नोकतांााजोवननी शोलाा घणीरे
ााराजकूंवर परवर्यो ाा न्यांछे कन्या गांधर्व तणीरेाा
१ाा ाकुव्युंाा२मुंाा ााराग केदारोाा ाा
न्यारे आव्यो राजद्वाराााबारणे मुकीने तोखार
ााराजकुंवर करे कराा मंदिरमां केम परवरेाा१ाा
मनमां ते करे उगमगाा लय युक्त थई मांडे पगाा
खडग जेडुं करमां धरीाासमर्यो मनथी हरहरीााा
ाा ाादुपोाा ााधर्यू जेउग मन दृढ करीनेाा
मां लणो निव जोवााथीलार कासे तेथरो
ााााानवुं अंतःपुर जोवााा३ाा मायावि जेरुंमा

या कीधी॥ मुजने मोकुवा माटे॥ जे प्रपंच नहोय
पापीनो॥ शुं मंदिरमां मुने वाटे॥४॥ सुरपतिना
लोचन सरखुं॥ ते शा माटे छे मृत्या॥ कनक केल
थि कुमकीधूं॥ नाणानी नथी मृत्य॥ पानारी न-
पुंशक के पुरुष॥ को नथी पक्षीने पशु॥ करनारे घ-
णो श्रम कीधो॥ तो शा माटे नथी वस्युं॥५॥
जेम करतो आधेरो याल्यो॥ राय शत्रुजितनो
तन्न॥ विकुन्डला दासी दिठी, त्यां करती अंगमर-
दन्न॥६॥ सुंदर रूपने मदन फेरणा॥ दिठो आ-
वतो राया॥ साद करती स्केलंद्री ते॥ अंतःपुरमां
न्याया॥७॥ मृदालशा प्रत्ये दासी जोसी॥ जे कु-
करीकुरजेड॥ राणिजि राजकुंआवेछे तेपरा॥
काम जोवा कोड॥८॥ सांभळीने शामा
हरखी॥ पार्वति वचन थयुं साचूं॥ पापिने व-
धकरी मुने वरे॥ जेवुं जछेतं लख्युं॥९॥ आग-
ण अंतर पट किधूं॥ लज्जा मनमां आणी॥
पछे स्केलंद्री स्वामी मोकली॥ पात्र भरीने पा-
णी॥१०॥ आव भाव करी मोकली॥ बोली वि-
कुन्डला वाणी॥ आघा पधारो शोक मूकी॥ तम
ने तेडे मुज राणी॥११॥ वायक सांभळी शामा के-

रा॥ विस्मय पाम्यो भूप॥ दासी कहेनी आहा-
वी छे तो॥ राणीनुं केवुं रूप॥१३॥ ॥
धवळ॥ ॥रूप जोवा गयो गुणवंतो॥
आप हैडुं दृढ करीरे॥ विप्र प्रेमानंद एम भणे॥
पछी केम मळी ते सुंदरीरे॥१४॥ ॥कडवुं
१७ मुं॥ ॥राग बेहागडानी चोपाई॥
॥ ॥राजकुंवर गयो उल्लासे॥ दासि
जावि मृदालशा पासे॥१॥ राणि कने आज्ञा
लीधी॥ आपि आसन पूजा कीधी॥२॥ जेठ
पाताळकेतुनुं घर॥ जाणे वास वसे विश्वंभर
॥३॥ द्वार शोभा हारोहारे॥ लीपि भीत कनक
नी गारे॥ मध्ये स्फाटिक मणिना स्थंभा॥ ठामो
ठामे दिसे प्रतिबिम्ब॥४॥ चित्रामण को
पासे चळके॥ मुक्ताफळना तोरण लळके॥५॥
एवूं सदन मुक्युं छे समारी॥ रीतुध्वज रह्यो छे
विचारी॥६॥ पछे बोल्यो राजकुमार॥ दासीने
पुछ्यो समाचार॥७॥ तमो जते दिसो छो एक
॥ आतो ओरडी दिसे अनेक॥८॥ एकोणे स
मार्युं धाम॥ एना वसनारनुं शुं नाम॥१०
॥ भुवन शा माटे छे सुनकार॥ कहो वात मांडी-



નારદ

રિતુધ્વજ. મદાલશા વિકુંડળા.

ते नारीरा शा त्यारे कहे विद्युल्लता नारीशा सतवा
त कुंकुं विचारीशा परा घडि विश्वकरमाज्जे ज्यस्य
मेवा ज्यहीं पूर्वं वस्ता विश्वदेवा ।।२३।। ज्जेक दैत्त
हतो कंठल धारा ईंद्रे सोंप्युं त्हेने घर जारा ।।२४
ज्यांथी देव थया विदाये ।। कंठलधार रह्यो ज्यां
राये ।।२५।। ते राजनी कुंमारीशा ज्यानपणमां
कुं ज्यंगे सारीशा२६।। पिता मार्यो म्हारो ज्या
राम ।। ताज पाताल ज्जे वांनामा ।।२७।। ज्जेछे
मृगांकेतूना ज्याणा ।। त्हेनां रूप महा वखाणा ।।
२८।। तेणे घर रिद्धि लूटि लीधी ।। ज्यन्यो ज्जे दा
सी मुज्जने कीधी ।।२९।। दुष्ट दमे छे त्राणलोक व्य
सर्वे लूटि लयूं ज्यां घन्ना ।।३०।। मूने राखीछे
घणती वारी ।। कोण लणे ज्यां पीडा म्हारी ।।
३१।। ज्जेक गाल्लव नामे ऋषिराज्या ।। त्हेनो त्र
णघार लाग्यो यज्ञज्या ।।३२।। राज्जरि तुध्वजछे
जळवंता ।। त्हेणे ज्याण्यो ज्जेकनो ज्यंता ।। पाता
ळकेतू गयो न्हासीशा री तुध्वजना युद्धथी त्रासी
।।३४।। ज्जेक मृगालशा नामे नारी ।। विश्वावसु
गांधर्व कुमारी ।।३५।। त्हेनुं रूप मनोहर नरजी
।। हरि लाव्यो पापि ते हरजी ।।३६।। ज्याव्यो क-

त्या करीने काजे॥पापि ले आव्यो पाताळे॥१९
॥परणवानी कीधि सज्य छे॥तव सांभर्यो पोतानो
भाछे॥२०॥भूने मुकी सांचववा घेर॥ते तो गयो
वाळवा वेर॥२१॥आणीजे ते लिया कारणे मार्यो॥
पण भाइये तमो पधार्या॥२२॥जे कन्या कुंवर तु-
मने कावी॥कोवात दिसे छे भावी॥२३॥तमे प्रेम
प्रेमदाने परणो॥आ मोल सज्या छे घणो॥२४
॥जे ईश्वरे तमने आपी॥केम थाशे आवरी
पापी॥२५॥त्यारे रितुध्वज बोल्यो वाणी॥देज
दो मदालसा राणी॥२६॥हूं छउं अयोध्यानो रा-
जन॥तालकेतु कियो पातन॥२७॥पछे पाताल
केतु पूंठे धायो॥कां आव्यो ने कां संताणो॥२८
त्यारे बन्युं छे महा युध्ध॥आकुणिये कादुं अंतर
बुद्ध॥२९॥पडे बन्नथी ईंद्र जहारा॥कवी नैण
निरखीनाराने॥३०॥मीरे मीट बन्यो नी मणी॥कु
वाल कुंहेथी टणी॥३१॥हर्षे नैणे नैणे रसपी-
धो॥पीतां मुर्छित नरने कियो॥३२॥ ॥
वळण॥ ॥चित्रामण बन्यो थयां॥पछे
मदालसा शुं वदे रे॥विप्र प्रेमानंद कहे॥श्रोता
सन्न धरो कुंहेरे॥१९॥ ॥कडवुं॥८मुं॥ ॥

रागबिहागडो॥ ॥भोलो भोलो लटका
णा राय॥ मुजने मलकडो॥ हूं तो लागुं तमारे पाय
मुजने मलकडे॥१॥ तमो जनमान्या ते शुं य, मु-
जने मलकडो॥ कांई मन्न न आवी कुंथ, मुजने म
लकडो॥२॥ हवे अगीने आप संताषिये, मुज
ने मलकडो॥ पेम पाघडिनो छूटो वाळिये, मु-
जने मलकडो॥३॥ अडकुं जडग पडे छे गणी, मुज
नें मलकडो॥ वागशे तो आशो सो रणी, मुजनें
मलकडो॥४॥ आज शुं करो अर्ध पडियाणि, मुज-
ने मलकडो॥ पाघरी हिसे छे रढियाळी, मुजने मल
कडो॥५॥ दृष्ट तो कांई राखीये साहि, मुजने मल-
कडो॥ जेम नाकीने छोकरवाहि॥ मुजने मलकडो॥
६॥ पुछा पुछ कसो मां महाराज, मुजने मलकडे
॥ करो विवाहनो तमो साज॥ मुजने मलकडो॥७
मुने कही गयां उमया देव॥ मुजने मलकडो॥ ला
खशो नहिं देव, मुजने मलकडो॥८॥ नथी जीलुं
त्रीजुं कोय, मुजने मलकडो॥ हवे विकल्प मनरे स
होय, मुजने मलकडो॥९॥ हवे शुं जणावो छो प्रीत
॥ मुजने मलकडो॥ हमो प्रीछूं पुरुषनी रीत, मुज
ने मलकडो॥१०॥ तमो मननमां घरो न वक्रोधीर, मु

अने मलकेडा म्हारे तमो छो मनना हीर, मुज
ने मलकेडा ॥४॥ ॥वलण॥ ॥अनुकूळे री
त जाएणुं पुरुषनी ॥तव राजा बोल्यो हे रती॥ ख्या
ल देखी चतुर नरनी॥ पछे मृगालशा घेली थती
॥१॥ ॥कडवुं १८ मुं॥ ॥राग केदारानी
चाल ढुंकडी॥ ॥देखि चालते चतुर नरनी
॥माया लागी राजकुंवरनी॥१॥ कांई मोघेरी ते
थाती॥ मूज कुणा करे मदमाती॥२॥ पछी मुन्य
थई रहि म्होडे॥ पाछी बोसरि आघूं ज्होडे॥ ते
म तेम राय आघो आवे॥ प्रीते प्रेम करीने बो-
लावे॥३॥ हावे लाज क्होनी धरो छो॥ ने शाम
टे लज्जा करो छो॥ मुज वदन कुणा देखाडो॥
सुख स्वर्गनुं पामी पमाडो॥४॥ मोह्यो मोह्यो
तमारे लटके॥ तो से न जोवो मुज मटके॥ कहां
मुन्य थयां हो नारी॥ नव जोवो प्रथम भुनेमा
री॥५॥ आ अंबर फेर्युं छे आछूं॥ मुज ऊपर
थी करो ते पाछूं॥ हुं मोह्यो छुं अदभूत अंगा
करी वदनी ते कारे तेजे॥६॥ मूज देखाय
छे घूंघटमां॥ लाज मूकी वहो ऊल्लटमां॥
त्यारे घूंघटने परो लीधो॥ रीतूड्यलने घेलो

ऋषिओ ॥८॥ शांभळनो भाव लहि कहुं आण ॥ सु
जनणे चंद्रनी कळा ॥ रह्यो राज पासे आवी
॥ बोले नव अजाण बोलावी ॥६॥ जराये
मायाने पासे ॥ जेम भ्रमर अंबुज निवासे ॥
तेने रूपे ते मेरु डोले ॥ तो मनुष्य ते कोण तोले ॥
ता पासे आवी बेठो ते राये ॥ पामरियें ढांके
छे वाये ॥ कुचरो वणझ्यो ते देखे नांखी ॥ मृगाल
शानी चीराडी मांखी ॥९॥ मूंछ जूवे छे कु
रीकरी ॥ म्हारा सम जोजो सुंदरी ॥ म्हें मुक्या
छे तमने वरी ॥ तो शुं ज्ञान धरो ओसरी ॥१०
॥ ज्हां तो छे अर किंकरी ॥ जूवो प्रेमे नेणां भरी
॥ आवो साथे करुणा करी ॥ ईश्वर आपशे आ
णी ॥११॥ तमो गांधर्वनी कुंवरी ॥ पापि ला
व्यो तमने हरि ॥ हुं तो तेहने नांखिश मारी,
तुं तो छेनव समजे नारी ॥१२॥ अमो कहुं छुं
प्रणिपत करी ॥ नव बोलो तो वेर हुं मरी ॥ त
मो परो करो घुंघट ॥ जो लो पाये घडु मुगट ॥१३
॥ पायें हुं पामरीनो पट ॥ वहेवाणी आणी
ऊलट ॥ जे मिथ्या शी करवी चट ॥ संघुं प्रीछ्युं
नथी हुं नट ॥१४॥ पापि हरि लाव्यो छे तुजने

॥ ते तो घणुं हरखे छे मुजने ॥ काली तुम्हने
घडुं वडा वेरिनुं शिर कापीस सद्दा ॥ ५ ॥ टाळो दे-
ह तणी जटपटा ॥ ढीठो नारी आणी ढीलदा म-
न मेळववानो कोड ॥ काली तुछे म्हारी जोड ॥ ६ ॥
॥ वळण ॥ ॥ पछि ढीलट
आणी जन्यो मळियां ॥ कहे लट प्रेमानंद रा ॥
पछे पाणी गृहण केम हवुं ॥ तेनुं कहुं पद बंधे
॥ १७ ॥ ॥ कडवुं ॥ २० मुं ॥ ॥ राग देशाख-
नी चोपाइ ॥ ॥ नारद कहे सांभळो ने
धर्म ॥ पछी केम थयूं विवाहनुं कर्म ॥ १ ॥ मृगांकले-
खा राजाने मळी ॥ आकाशे बिजळी सम ळळी
॥ २ ॥ तव राजा जे चाली आचरी ॥ जम्बुद्वीप
जेसो सुंदरी ॥ दासीने कह्युं थैये विदाया ॥ जेटले
आव्या नारद ऋषीराया ॥ ३ ॥ ऋषि तणुं किधुं पूज-
न ॥ समाचार कह्यो राजन ॥ पाळ्युं थयुं आ-
व्या महाराज ॥ मुज सरखूं कै कहिये काज ॥ ४ ॥ ना-
रद कहे सारो शिघ्र कार्य ॥ आव्यो छूं हूं थवा
आचार्य ॥ ५ ॥ परणी थाओ आंबे जन्यारा ॥
चोरि रची तव ब्रह्मकुमार ॥ ६ ॥ आवणता जोश्या
मुनी लगवाना ॥ विकुंडळा देतुं कन्यादान ॥ ल

आरोपी कंठे वरमाळ॥ गांधर्व विवाह किधो
तत्क्षण॥१०॥ तारे अंतरधान तव थया॥ त
त्पर थैन र नारी रीझियां॥११॥ हांसी प्रेम जो
ली मुख चाण॥ तमो जन्योने कन्ने कल्याण॥
१२॥ राय अश्वे प्रेम नेह धरी॥ ओछंगे जडी
सुंदरी॥१३॥ देवता जेम आपेलो तुरी॥ तेम आ
व्यो तेम चाल्यो करी॥१४॥ गालव आदि ऋषी
जुवे वाट॥ न आव्यो कुंवर तेथी तेणी याट॥१
५॥ शया घोडाने पगले पळ्या॥ कहेवे कुंवर कन्याने
लै वाटे मळ्या॥१६॥ ऊतरी हेठां कर्यो नमस्कार॥
अथ इति कह्यो समाचार॥१७॥ ऋषी गाल
वतो हरख्या घणुं॥ मान न बांध्युं पोता तणुं॥
१८॥ एना पिताने लगाडुं पाय॥ रतनसरी-
खी लै कन्याय॥१९॥ पछे अयोध्या आव्या ऋषी
राय॥ वधामणां पुरमध्ये जाय॥२०॥ सेवक आ
व्या शत्रुजित लणी॥ स्वामि सांभळिये वधाम
णी॥२१॥ पुत्र लाव्यो परणी प्रेमदा॥ ऊठ्यो रा
जन मनमां अति मुदा॥२२॥ ऋषिने पाये श-
त्रुजित पड्यो॥ आज पुत्र मने पड्यो जड्यो॥२३
साथे शामानी कीधी जेडा॥ मुनि तमे फो-

माड्याकेडा॥२२॥ नम्र नम मणवा आविया॥
योग्य रीते भेट लाविया॥२३॥ पांच दिवस मुनि
रोणा रह्या॥ पछे पोताने स्थानक गया॥२४
॥ राजन जे ते मंगल घरी॥ पुत्रनो विवाह मांड्यो
करी॥२५॥ मृदालसाने पुछी वात॥ केणे लग्न
रां मातने तात॥२६॥ कुटुंब सर्वनुं लीधुं नाम
मा॥ सरसे जोण्यो सारो ठाम॥२७॥ पछे
लख्यो पत्र समाचार॥ गांधर्व लोक गयो सर
दार॥२८॥ जो ल्यो सेवक आव्यो केडशुं॥ आ
कागळ त्योनी विश्वा वसु॥२९॥ स्वस्ति श्री गां
धर्वनो देश॥ विश्वावसु नामें ने नरेश॥३०॥
लष्मितंग शत्रुजित महिपती॥ अमो रह्या छुं ती
तमारी वती॥३१॥ जीक अेक ने छे वधामणी॥
आपार्थ दीकरी ने तम तणी॥३२॥ पाताल केतू
गयो तो हरी॥ ते कन्या मुज पुत्रशुं वरी॥३३॥
नारदजिये कराव्यो विवाह॥ मुने करी छे पत्नी छ
ईच्छाया॥३४॥ माटे मणवाने आवजो॥ रीत
घरे ने ते लावजो॥३५॥ रीवकने शिवनुं छे वचं-
ना॥ तो जहिं लगी आव्यो राजन॥३६॥ आडि
हमो आवि फोंच्यिये जहीं॥ पण शुं करीये जे

(५२) मृगालसाख्यान.

अनुमती नहीं ॥ उना वांच्युं पत्र तेवेगे करी ॥
जोस्यो राजा नेणे जपा लरी ॥४१॥ जेशुं सा-
सुं के छे स्वपन्न ॥ लवी द्रिकरी रूप रतन्न ॥४
॥ आलो सर्व ओवेगे करी ॥ विधीये परणावुं दि
करी ॥४२॥ गांधर्व सर्व थया सावधान ॥ ली
धां धन्न लरी वैमान ॥४३॥ गाममां वरत्यो ज
यजयकार ॥ अयोध्या आव्यो परिवार ॥४४
॥ लेट्यां सर्वे वेगे करी ॥ मात तातने मळि हेते क
री ॥४५॥ अथ इति पछे करी नववात ॥ हर्ष
पाम्यां मातने तात ॥४६॥ आपी कन्या दान ला
क्ये पाया ॥ विश्वावसु आदे थै विदाया ॥४७॥ पु
त्रि कहे पिताने परघरो ॥ छे ईंद्रपे अधिको स-
सरो ॥४८॥ ॥ वलण ॥ ॥ ससरा
तुं सुज छे घणुं ॥ तव दुःख सर्व पाछुं कर्युं रे ॥
नारद कहे सुणो धर्म राजा ॥ पछे मृगालसा जे
शुं कर्युं रे ॥४९॥ ॥ कडवुं ॥ १० मुं ॥ ॥
राग गोडीनी देशी ॥ ॥ सतगुरु वाणी श्रो
यरो ॥ सांलळो सुजन मन्न ॥ सुज पाम्यां
घणुं प्रेमदा ॥ ससरा तणे लोवन्न ॥१॥ प्री
त वाधे नव नवी ॥ शामाने स्वामी साथ ॥

मृगालशाना हाथनो मणि।। आंध्यो पतिने हाथ
।।२।। सती अेणिपेर आोचरे रे।। सांभलजो म्हाराशा
म।। मणि देखिस तम थी वेगलो तो।। हुं मरिश
आ।।ठाम।।३।। ढाल ने धिरशो न नाथ जी।। आ
पणे छे दुःख मंत्र।। पाताल केतु दूरे सोधतो रे।।
तन्न उगिइकुने अन्य।।४।। न्नृप वात उतराउ रे।।
त्यारे तमो जशो गाम।। मणि लेई रे।। अेक-
लो ले।।म रिरी आणे ठाम।।५।। ते वेलाथी जां
घियो रे।। ने मणी अगम घाटे।। मृगया रमवा निस
र्यो तो।। राय वननी वाटे।।६।। अेक सरोवर आ-
वियूं।। त्यां उतर्यो राजकुमार।। रीतण जल पीवा
स्नान्न कर्यो।। वृक्षे बांधी तोखार।।७।। पोस्नलरिपा
णी लणी रे।। कूण मांहे धरिने पग।। तेन मणि नूं
माहे पडीयूं।। देखि निकष्या जे नाग।।८।। धरि वृष्य
ल पाछो ओसरी।। ने धनुष लीधूं ताणी।। मार-
वा मांडे नेहने।। तव सर्प बोल्या वाणी।।ल्लाह
मो आव्या छउं दुर्ध मां रे।। ह्मारो मणि दिठो जात
हारा।। मनुष्यमां तुं अधिक छो।। माटे हिंने मित्राच्या
रा।।९।। अन्यो अन्य आवी मल्या।। ने अधरा
बाधा स्नभा।। कूपे त्रण जण शोभता रे।। अह्मा सि

ध्रुव ऊर्द्ध नेमा॥ धारी तुह्ने मांडी कह्यो ने॥ अथि
र्ठति समाप्यारा॥ तमो कोना छो दीकरा॥ तव
बोल्या नागकुमारा॥ धरा॥ न्यात कुमारी नाग-
नी छा॥ पाताळ कमाऊ गामा॥ अश्वक नागना
दिकरा कमो॥ चंद्र चुडामणि नामा॥ धडा॥ कमो
मोटा पुरुष रहिये तम्यारे॥ थियो आपणे मित्रा
चारा॥ रीतुध्वज राजा आवजे॥ तमो नित्य आ
णे ठार॥ धरा॥ सुख देखाडीश स्वर्गनूं॥ तमे रा-
ख्यो गालवनो याग॥ याग विशेथी पामियो रे
॥ जीवन विशे तूं लाग्या॥ धपा॥ तूं काले अन-
तिहे धने॥ माटे मित्र तुं योग्या॥ हवे कमो न वस
ही सकुं॥ लागे तमारो वियोग॥ धडा॥ ने दहाडे
आवशो नहिं॥ ते दहाडे अपवास॥ पछी ते पा-
छा फर्या॥ अंतरे अति उल्हास॥ धळा॥ अणनण
नित्य आवी मळे॥ मेवा लावे अमूल्या॥ खाय
पिये आनंद रही॥ सूख लोगवे अतुल्या॥ धटा॥
जयो घ्या पति आवता॥ त्यां वसे नागकुमार
॥ वपावीने वळे नागते॥ फरिने फोणा॥ प्यार॥ धए
॥ पिता पूछे पुत्रने॥ क्यां जओ छो नित तन्ना॥ उ
त्तर पाछो वाळे नहिं ते॥ केम कहेवाय मनुष्य मळ-

ना ॥ २७ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ केम कहे मणवूं म
नुष्यनुं ॥ अ कथा एटलेथी रहीरे ॥ विप्र प्रेमानंद
एम कहे ॥ ताल के तू करतो रखे त्यां सहीरे ॥ २८ ॥ ॥
कडवुं ॥ २९ मुं ॥ ॥ राग धवळ धनासीनी देशी ॥
॥ ॥ श्री सतगुरु एम वाणि बोले ॥ सां
भळो रुखलनड रायजी ॥ पोताने के तू जे रखे किधुं ॥
तेहनी कुंकु कथाय जी ॥ १ ॥ रसातालथी पाछो आ
व्यो ॥ ज्यां छे पोतानूं धाम जी ॥ दुष्ट आवतो जोई
दासी ॥ रोई दई छोडी काम जी ॥ २ ॥ दानव तो वि
स्मय थयो रे ॥ एकेम रुवे छे दासजी ॥ उत्पात अ-
ति छे अनंगि अंगे ॥ रखे स्त्रि पामी होय नाश जी ॥
३ ॥ धाईने मंदिरमां पेठो ॥ मृगालेखाने जोवा जी
॥ आसन तेहनुं सुनुं जोतां ॥ पापि लाग्यो रोवा-
जी ॥ ४ ॥ केहेर दासी कहां गई अबळा ॥ म्हारा प्राण
तणो आधार जी ॥ विकुंडला कहे कोई आव्यो ॥ रू-
लटराज कुमार जी ॥ ५ ॥ मृगालेखानो कर ग्रहीने
॥ वात कै जेकलाबीजी ॥ म्हारुं कांई त्हां नहिं
याल्युं ॥ लडाकु ढाणी नाखीजी ॥ ६ ॥ पवन वेगी को
देवनो बाळजी ॥ ते उपर बेठां नरनार जी ॥ एवी
वात सुणी पापीये ॥ ग्रहे बाणनो भाई मार जी ॥

जा घणो धूने कांई न सूजे ॥ ओणा ओण अति मां-
डिजी ॥ वण वांके मुने मृदालसा रे ॥ गई ए कां
थकी छांडिजी ॥ ८ ॥ अन्न जळ कुंवर रे लउं नहीं ॥
मृदालसा मळे रांणीजी ॥ लई अन्ना रोने निर-
धार थतो ॥ साधुं तेनो अंत आणीजी ॥ पार-
धे रितुध्वज हाथ करी होया ॥ तो तेने न जीता-
यजी ॥ एवुं विचारीने पृथ्वीपर ॥ धरि जोगीनी
कायजी ॥ ९ ॥ गुप्त ग्रेवरने नहि नाळां ॥ लई उ-
त्तर नाणी पणियोजी ॥ केवे समाचार केवा
आव्या ॥ वाटे नारदने भणियोजी ॥ १० ॥ कर जो-
डीने दानव बोल्यो ॥ कहो रुषी कइ णा फजी ॥ म-
री मृदालसा ओवारे ॥ तेनी कहो कांई नाण-
जी ॥ ११ ॥ नारद कहे तुछे मुने दालो ॥ कुंतु
ने अपेरजी ॥ गांधर्वि कन्या देशावर्नितु ॥ ते शत्रु
जितने घेरजी ॥ १२ ॥ अम कहिने नारद वणिया ॥
थया अंतरधानजी ॥ दानव आव्यो अयोध्या
मांहे ॥ ज्यां रीतुध्वजनुं निधानजी ॥ १३ ॥ भिक्षु-
क रूपे भिक्षा मागे ॥ पुछे सघणी वातजी ॥ मंदिर
आव्यो मृदालसाने ॥ पछे रंक विप्रनी नातजी ॥ ए
॥ छने छजीली जेठी दीठी ॥ अप्सरा मनमां पेठी

जी ॥ असुर कहे अंगना स्वामी ॥ घणी घाली
जेठे जी ॥ ५३ ॥ दीठ जन्म लगी हुं क्यारे ॥ ने
आपणा देशनजी ॥ लग्न करे ते भामनि
केशा ॥ कणी करवा निज मनजी ॥ ५४ ॥ पण हरि
दनि हाथ न आवे ॥ सत्य पोतानुं पालेजी ॥ अ
सुर विचारे जणकुं तो ॥ सती शाप दई बालेजी
॥ ५५ ॥ कुन लोभगयुं राज न लोभगवे ॥ मृगालेखा प
मे मरण जी ॥ त्यारे ध्यान कुलवाये मननी ॥ ठरे मुन
अंतःकरणजी ॥ ५६ ॥ एक दिवस भणियो रितुध्वज
ने ॥ पापी बोल्यो वाणी जी ॥ कहो कुंवर आ भणि
मोघो छे ॥ केम बांध्यो हाथे ताणी जी ॥ ५७ ॥ अबां
धवो तो घरे नहिं तम ने ॥ दीसे नारिनो शृंगार जी
॥ अघाण बांध्युं मृगालेखाये ॥ मंगल करीने वि
वार जी ॥ ५८ ॥ क्यारे माथे रात्रु अनंत छे ॥ मुने
मुवो कहे ते झोक जी ॥ आ मणि विना नारी नहिं
माने ॥ देखिने ल्ये सुरलोक जी ॥ ५९ ॥ ॥
वचन ॥ ॥ सुरलोक ल्ये मणि देखे तो ॥
पण मुवे मुजुं कहेने नहिं रे ॥ जोगी कहे महाराज
छो ॥ तमो चतुर मोटा छो सही रे ॥ ६० ॥ ॥
कडवुं ॥ २७ मुं ॥ ॥ राग मेवाडनी देशी ॥

॥ ॥एकेकुं कहिने कुंवर पेखियो॥देते वि
चार्यं अंतःकर्ण॥ मणि लउं हुं कपट करीते॥
मृगांकलेखा पामे मर्ण॥४॥मृगांकलेखा मरे के अ
मरे॥ जेजेमांथी एक वानुं थाय॥पछी रीतु
ध्वजनी भूप लीधी॥ छानो मानो नयाराय पे
ला सरोवरे आव्यो कुंवरने॥ मज्या पेलाजेना
गा॥पाताल केतुजे नेयुं आवी॥छे क्यां म्हा
रो लागा॥७॥ दिवस केटला वच्ये वहीछे॥
धर्युं विप्रनुं रुप॥ ते दिवसे थयुं असुर नागने॥स्
वारो आव्यो भूपा॥८॥ रीतुध्वज त्यांन्हाबाजेठो
॥जेक जेठो दीठो रुषीजी॥ वृद्ध रुप पोतानुं कीधुं
ने॥ तेकहे हुं दुःखीजी॥९॥ राय पुछे छे प्रेम धरीने
॥केम जेठा मुनि नन्ना॥निश्वास मुकोछो घडी घडी
॥जळ पूर्ण नयन लोचन्न॥१०॥कर कपाळे जेठे
ने॥ बोल्यो पाताल केतु॥ घणुं दुःखछे म्हारा कर्म
॥ने पुछो धारी हेतु॥११॥ वरुण लोक महीं कुंव-
संछुं॥जति तेजे म्हारुं नाम॥ एक ब्राह्मणने
घेर कन्या॥ रुपे जनजन धाम॥ ते साथे विवाह म-
ल्यो पुत्रनो॥ हेना बापने इच्छा घणी॥कन्याक
हे मुज पण छा॥ नेणी मृगांकलेखानो मणि॥ह

ते अयोध्यामां परणीछे ॥ रीतुध्वज तेहनो कंथा ॥
ते लेवा कुं आवियो छूं ॥ देखाडो ते गामनो पंथा ॥
१० ॥ सत्यवादी शत्रूजित राजा ॥ सत्यपाळे ते-
नो कुंमार ॥ कुरंकु ऋषीनुं कार्य करतां ॥ मुजथी न
नीकळे नकार ॥ ११ ॥ कहो तमो कोण देशा वसो
छो ॥ केम आव्या आ सरोवर घाट ॥ ते जाणता
हो तो देखाडो ॥ अयोध्या केरी वाट ॥ १२ ॥ वा
यक सुणी ते विप्र केरां ॥ कुंवरे किधो दंड प्रणाम
॥ प्रभु लेहने लेवा आव्यो छो ॥ ते तो म्हारुं ना
म ॥ १३ ॥ ते मणि म्हारी पास छे ॥ पण केहेनें
न आपाय ॥ मृगालशा जे जाणे तो ॥ वात वि
प्रित थाय ॥ १४ ॥ दैत कहे सांभळरे राजा ॥ जे
अर्थे सरसे म्हारो ॥ तो कालें मणि आपिश ॥ तु
पति पाछो जे त्यारो ॥ १५ ॥ सत्त वचन आप्युं
पापिये ॥ वळी अेम बोल्यो वचन ॥ आवतां मु
ने वाटे मळ्या हता ॥ नागतणा वे जतन ॥ १६ ॥
तेणे कहाव्युं लैने कहेजो ॥ अमने धारी संध्या
काळ ॥ वस्तु अनोपम लावशी छे ॥ माटे पाछा न
जशो भूपाळ ॥ १७ ॥ पछे राजाये मणि छोडि
आप्यो ॥ पापी पाछो वळियो ॥ पाताळमांहे

पाछो आविया॥ नागकुंवरने भणियो॥ ४८॥ कह-
वुं रितु छ्य ते कह्युं छे॥ मानजे मारे हाम॥ मृग-
यारमवा नव आवशो॥ रहेजो तमारे धाम॥
वना नाग पुत्र पाछा वळ्या जाण्युं॥ मित्र आज्ञा
आपी॥ पछे अयोध्यामां विप्रने रुपे॥ घोडलो आ-
व्यो पापी॥ २०॥ ॥ वचन॥ ॥ पापी
प्रपंच करी रोतो आव्यो॥ पालव दिधो मुखे रा॥
राज सभामां आवि भणियो॥ सांभळ राजन
कुंजरे॥ २१॥ ॥ कडवुं॥ २४ मुं॥ ॥
रागवेराडीनी चोपाई॥ ॥ दैत आव्यो अ-
योध्या गाम॥ कुंवरीतु ध्वननुं लई नाम॥ १॥ प्र-
जन सरवे विस्मय थया॥ आ ब्राह्मण केण कार-
ण रोया॥ २॥ राज सभामां आवी पड्यो॥ हाय
हाय कुंवर कही रड्यो॥ ३॥ चेष्टा दैत मांडी कहा
कहे मारी दीकर मूक पोकार॥ राय शत्रुजित वि-
स्मय थयो॥ समाचार पुछवा पासे गयो॥ ४॥ क-
हो रुशिल क्यांथी आविया॥ जे विप्रित वात क्यां-
थी लाविया॥ ५॥ ब्राह्मण कहे सांभळ राजन
॥ निश्चे नारी पाम्यो दुखतन॥ ६॥ सरोवर मां-
थी मगरे गळ्यो॥ हुं हतो पासे ने तरफड्यो॥ दाप

केचुं करी बेठा शिराय ॥ राज्ञ पडियो प्रथवी मां-
आ ॥ जा मृग्नन्नं संत्तारी केता ॥ अयोध्यापति थ-
यो छे अयेताा१ना बेडी थई मांजोटणवणाटा ॥
को कुंवर काां नेवडावो वाट ॥१॥ शत्रून तनेवा-
रे सकु कोया ॥ प्रथवि पछाडो जाईते रोया ॥२॥
म्हारा कुंवर क्यां गयो परहरी ॥ विधवा वकु शामा
ट करी ॥३॥ आजूं नग्र करे छे रुदन ॥ न रुवे मृगा-
लशाखि नन ॥४॥ जे जोटुं नथी मरण पाम्या
नन ॥ साधुं होयलो मुने कहे सन्न ॥५॥ सन्न-
सर्वने वारे सुंदरी ॥ निश्चे वात नथी जे जरी ॥६
॥ नूढ बोलो जे ब्राह्मण करी ॥ जे कहे तेनाथी
शुं बंध थशे ॥७॥ मृगालशा जे तओ रुषीदेव ॥
पाताल केल आव्यो तत्तक्षेव ॥८॥ शुं नूढो मुने
तुं कहे पापणि ॥ साधवि होय नव पासे घणि ॥९
॥ मृगालशाये तव वाणि लणी ॥ शुं देखाडे म्हो
टम आपणी ॥ १०॥ राान शाके को स्वामिने कणी ॥
अेक जेधाणि आांधी मुज तणी ॥ ११॥ त्यारे रुशिन
ये छोडी नाख्यो मणी ॥ लएयुं तव मरण पाम्यो घ-
णी ॥१२॥ तुर्त ताणवूं शादुं आकुएी ॥ बिचयाल्यो
सुरलोक लगी ॥१३॥ त्यारे दैत रिज पाम्यो अ-

તિ ઘણી।। એ મારી નારી શત્રુ તણી।।૨૪।।એ
મુને મૂકી આવી પાપણી।। તો સુજે કેમ રહે એ
ઘણી।।૨૫।। મરસે રિતુધ્વજ આવી ઘેર।। મ્હારા
તાતકે તેનું વળિયું વેર।।૨૬।। એવું કહિ પામ્યો
અંતરધાન।। પછે રુસરોતે આવ્યા તે ઠામ।।
૨૭।। મોર્ધ્વ બેવારે દિઠી વધ્યું।। તવ શોચ લાગ્યું
નગ્ર અધ્યું।।૨૮।। ઊઠ્યો રોતો શત્રુજિત રાયા।। મૃ
દાલશાની લીધી કાયા।।૨૯।। સર્વ મળિને દિધું દ
હેન।। સ્નાન કર્યું તોયે નહિ ચેન।।૩૦।। પુત્ર વધૂ જ
ન્યો પરવસ્યાં।। રુમો માત પિતાને દુઃખિયાં કર્યાં।।
૩૧।। એમ રુદન કરતાં અશ્રુ લેરા।। એવે રાજકું
વર આવે છે ઘેર।।૩૨।। થાય માનશકુન અતિ
ચિંતાચીત।। અયોધ્યામાં દિઠું વિપ્રીત।।૩૩।। ઘો
ર શબ્દો શ્રવણે પડે।। આહ્યે ત્રાહ્યે કરી લૂપર ડે।।૩૪
।। ગુંનગ્ર વિષે ઊપન્યો ઊતપાત।। કુંવરે મનવિ
ચારી વાત।।૩૫।। ઊચાટ પેઠો પૂર માહ્યે।। શ્રવન ન્નોઈ
ને વિસ્મય થાય।।૩૬।। લોક દીઠા લૂપતિ તણી
।। મ્હારા આપોને વધામણી।।૩૭।। દુઃખ ન વ
મન ઘરશો રજા।। જો આવે છે અહીં રીતુધ્વજા।।
૩૮।। એવી સુણી પ્રજાની વીનતી।। ઊઘરક્યો

त्यां अयोध्यापति ॥३७॥ अरे अेते शरं साध्युं कशे ॥
मुवो पुत्र श्यम जीवतो थशे ॥३८॥ हर्ष अश्रु भरी
पंथे पड्यो ॥ एवे आवतो पुत्र सामो मळ्यो ॥३९
॥ गळे लपटायो ने तात ॥ कोणे निवाज्यो कहेनी वा
त ॥४०॥ आकाश मार्गे ब्राह्मण आवियो ॥ ते स
माचार अशुभ लाविया ॥४१॥ तेणे पुत्रने मुवो
कह्यो ॥ फरी पुत्र केम जिवतो थयो ॥४२॥ तातजी
मुने कांई थयुं नथी ॥ जूठो के ब्राह्मण सर्वथी ॥
४३॥ मृदालशानी पूछी वात ॥ पछि करतो त्यां
आंसु पात ॥४४॥ आउ मरणे केम पामे प्रेमदा ॥
साधवि सत पाळे छे सदा ॥४५॥ त्यारे पिताये
वाणी भणी ॥ ते ब्राह्मण लाव्यो तो मणी ॥४६
॥ ते मणिनुं वधु ने दरशण थयुं ॥ तत्काळ ताळवूं
फाटी गयुं ॥४७॥ देह पडी ते ठेकाणे फरी ॥ माया ते-
हनी धरणे परी ॥ प० ॥ ॥ वळण ॥ ॥
ताळवूं फाटी प्राण गयो ॥ ए वात कुंवरे सांभ-
ळीरे ॥ मृदालशाना मरण थकी ॥ पड्यो धरणीने मू
रछा वळीरे ॥ १ ॥ ॥ कडवुं २५ मुं ॥ ॥
राग परभियानी देशी ॥ ॥ पिताजी केरां व
चन सुणीने ॥ पुत्र पडियो भोम ॥ कुंवर पासे आ

(६४) मृगालेखा आख्यान.

श्य कहतो ॥ ते ऊठी चाल्यो व्योमामा ॥ अचेत-
न थयो रितुध्वज ॥ शरीरे वाध्यूं सीता ॥ कष्टव
त काया थरथरे ॥ आल्हाद अहद्यियुं चित्त ॥ राणि
त्तम थयो कुंवर ॥ लीलर आगी लागी ॥ कांइं
नारी करतो ऊठ्यो ॥ मूरछा हती ते भागी ॥ ३ ॥
मुगर ल्होणा मस्तकै ॥ रे एणुथी नसातां केश ॥ कुन
मनि काम नि करतो घायो ॥ वणि घरमां करतो प्रवेश
॥ ४ ॥ मेडि ऊतारीने गोख ल्ने तां ॥ स्त्री दीठी सेज
॥ पशुं हास्य करी संतायां नारी ॥ आपणो भागुं भेजा
पा ॥ प्रेम नकीले हो जे मन कीलो ॥ मृगालेखा मुकस
मा ॥ नेम चलावो तेम चालुं ॥ ने पडे मुकने गमा ॥ ५
॥ कूंपने कहां ककुलाचो काम नि ॥ तमो मूने घणुं कहा
लां ॥ प्रेम कहिने रोवा लाग्यो ॥ वणि जुवे पूर्ण
वंध्या पाणा ॥ ६ ॥ दासी कहे स्वामीशुं ओपो ॥ जेप
र ऊठ्या श्री भगवान ॥ आपणुं घर ऊद्वस करी
॥ राणिये वसाव्यूं स्मशान ॥ ७ ॥ ते तो हाथ कहिन
आवे ॥ ने ऊपाय कीने लाजा ॥ कनक वरणी का
या ने नी ॥ ते जाणिने कीधी राजा ॥ ए एवो
बोलते दासी केरो ॥ ते स्वामीथी कयम संभाया ॥
तेमनो तेम ऊघाडे मस्तक ॥ स्मशान भणि ते

त्याराला आवीने ऊतो रह्यो त्यां रामानी राणोजीरा ब्रह्मणरा ते पुछकरतो॥ पोताना अकुरत्नेजीरा॥ शुंलाभ निकत्नस्म थयां छे॥ स्म विसरत्ने जी॥ क्यारा समत्ने जोसो नहितो॥ देह करीश रत ऊडारा द्रवडी साद कड्डुं नम नो॥ कस्मो शे मुने नथी कर्तो॥ हो केशीला नाही विचार ले॥ हुं मुवो छउं तूं मर्तो॥ जेम शुकशे छो छोडवा दी॥ पाणि पाम्यो प्रेम॥ ऊठो केसां ऊठो केसां॥ पतिनी नणी स्मा पद्दा॥ मन व्याकुल ते कांई न नणे॥ जो से घेलां घेलां॥ कांई मृत्यु केम थयुं रे॥ हुं थयो नतुंथी केसां॥ ॥ अन्यो हाथथी जोसरडीने॥ राणोजी ने ढगलो किधो॥ पामरीमां गांसडी बांधी॥ मस्तक ऊपर लीधो॥ पछे देशमां ते कहवा लाग्यो॥ जमथो जार वारा रंजे वणिके जेहने मारा॥ न मत्नऊयात॥ मात पिता जे पूछे होत्यां॥ कहे कुंवर पाछो आव्या॥ दारुण वनमां परवर्यी लेतां॥ परवत गुफाने वाया॥ विकट वाट रात्ने तां॥ पूठे धाया राजराणी॥ रीतुध्वज पछी नव दीठो॥ केनो प्रेम द्वामां छे प्राणी॥ जक

चीत्रनंबर ५ मो.



वेगळ आव्युं गंगाकेरुं॥ त्यां बेठो राजकुमार॥
लजन मुजे तामनिनूं॥ नैणे ते जळनी धार॥
२॥ ॥वळण॥ ॥लरे नैणे अश्रु घणां
॥ध्यान नारीनूं ते घरे॥ पछे मात पिता त्यां आवि
मळ्यां॥ ने कालावाला कहिपेरे करे॥ २॥ ॥
कडवुं॥ २८ मुं॥ ॥राग अंदोलगोडी॥ ॥
मात पिता प्रेम अोच्चरे॥ हो व्हालारे॥ तमो मु
को मननो शोक॥ कुंवर कालारे॥ पाछुं कोई कर्युं
नथी, हो व्हालारे॥ जे गयूं होय ते परलोक॥ कुंव
र कालारे॥ १॥ कहावे कन्याने आण शुं, हो व्हाला
रे॥ जे थकी रूपरत्न॥ कुंवर कालारे॥ ते माटे मं
दिर आविये॥ हो व्हालारे॥ रजे लोपो हमारां व
चन्न॥ कुंवर कालारे॥ २॥ वन वसवूं छे दोह्यलुं
हो व्हालारे॥ क्यांतो विघ्नो म्होटां थाय॥ कुंव
र कालारे॥ आ कन्ने ती लोकोमां यशो॥ हो व्हा
लारे॥ स्त्रिने माटे वसवुं वन्न, कुंवर कालारे
॥३॥ एहवुं आपणा कुळमां थयुं नथी हो व्हा-
लारे॥ ते माटे मुको परितापा॥ कुंवर कालारे॥
माग्यां परण्यानां आवरी॥ हो व्हालारे॥ कां
ईकरशुं म्होटां जग्या॥ कुंवर कालारे॥४॥ घे

२ ग्रीष्मऋतु उष्णकाळतां, हो कालारे॥ तेलच्यो
पे नीत्य शरीर, कुंवर कालारे॥ त्यां पोतानि
मेणे अंग धूवो॥ हो कालारे॥ कैं दइडुं न्हावण
नीर कुंवर कालारे॥ ५॥ त्यां चूवा चंदनने जर्गल
हो कालारे॥ कस्तुरी नित्य चोळाया॥ कुंवरकाल
रे॥ केथि अंगे [illegible]म घास्तना, हो कालारे॥
त्यां लक्ष्म चोळवी काया॥ कुंवर कालारे॥ ६॥ त्यां
मेडी अटारीओ बेसवुं, हो कालारे॥ पोढवा पलं
ग तळाई॥ कुंवर कालारे॥ ७॥ त्यां सखवूं सल्या
उपरे, हो कालारे॥ कैं कंकरा खूंचे काया॥ कुंवर
कालारे॥ ८॥ त्यां कल्लोल किर्तन थै रह्या॥ हो का
लारे॥ जगवूं प्रातःकाळ, कुंवर कालारे॥ त्यां
वाघ वरु जोने घणां॥ हो कालारे॥ लय पमाडे
कुसु सियाळ॥ कुंवर कालारे॥ ९॥ त्यां यातूर मा
नछे दोहेला, हो कालारे॥ तेम सीतकाळनी
टाढ॥ कुंवर कालारे॥ ताप घणो ग्रीष्मकाळ-
मां, हो कालारे॥ नव थोले देहमां प्राण॥ कुंव
र कालारे॥ १०॥ आज्ञा मात पितानी पाळिये
हो कालारे॥ जेम वेद शास्त्रने न्याया॥ कुंवर
कालारे॥ मात पितानी आज्ञा विना हो कालारे

तपश्चार्यरे तो कृजन होया॥ कुंवर झलारे ॥५०॥ ॥
वजण॥ ॥ तप होम जंउ ना पामता॥ मात पि
तानी आज्ञा विन ग्रहे रे॥ विप्र प्रेमानंद लणे॥ ह
हे पुत्र वचन शांशां करे॥५१॥ ॥कडवुं॥१७मुं
॥ ॥राग माउ सोरठीनी चोपाई॥ ॥
रितुध्वज ते बोल्यो वाणी॥ आंखडिये लरीने
पाणी॥१॥ घेर आवुं रंं सुखलणी॥ हाय मोटी
मृदालशा राणी॥२॥ केशो शी सगाई वखाणी
आवुं आजबाने आपो ले आणी॥३॥ ले दृढहो
य पुरुष पुराणी॥ तोये न मणे मृदालशा राणी॥४
॥ तेहनुं भूख लुवे ते प्राणी॥ कम विजाएं ममघ-
णीयाणी॥५॥ माया कम लये लूलाणी॥ पीला
य छे कुजनी घाणी॥६॥ माटे आशा मूके लोहमान
री॥ म्हारी शि सगाई संलारि॥७॥ म्हांथी ऊठी
रीवात निरधारी॥ ल्हारे बोले मृदालशा नारी
॥८॥ म्हें तो पूल्या नथी मोरारी॥ ते वात तो मल्ल
विचारी॥९॥ ले सेव्या होय ऊमयाधारी॥ तो केम
मरे गांधर्व कुमारी॥१०॥ मात पिता न राखो वारी
॥ हमो ल्लेगी तमो संसारी॥११॥ ले आवे ऊठ
वा त्रिपुरारी॥ तोये हूं नव लऊं हारी॥१२॥ तमो

मनमांने ते करन्ने ।। म्हें तो गृहस्ताश्रमनेवर
न्यो ।।४३।। अलागियो हुं तमो पेट सरल्यो ।।
अेहेवुं जाणीने पाछां हरन्ने ।।४४।। निश्चे हुं थ-
यो जोगट्टा ।। हुं अपकरो छो हेकुर ।।४५।। पाजेवाटे
हुं कूटायो ।। तेवारनो सोधुं श्यम पायो ।।४६।।
सर्वे थयुं म्हारे निहंदा ।। हुं तो छगें त्नाये गमंघ
।।४७।। म्हें तो सगाई तमारी तोडी ।। ते माटे योळी
म्हें राखोडी ।।४८।। त्यारे बोल्यां छे मावडी ।। मु
ने कहां सेके छे भावडी ।।४९।। वहु आवु सरवनी
भरे ।। पण ताशी पेठे कोई ना करे ।।५०।। म्हारुं कह्युं
कुंवर जी करो ।। म्हारा समतमो पाछा हुरो ।।५१।।
त्नाव सगाई तो कांई रोजो ।। जे मतरछोडी रो
नाखो ।।५२।। कह्युं नव मान्युं नवलेरा ।। कुंवरने
मन वाध्यो कजेरा ।।५३।। अेवो विचार मात ता
ते कह्यो ।। तव कुंवर त्यांथी न्हासी गयो ।।५४।। व्रू
ह पड्यां पृथ्वीये रणवणी ।। जयोध्या थाल्यां कण
कणी ।।५५।। वहु दिशानुं हुःजन छांडियूं ।। शत्रु
जि ते राजसन मांडियूं ।।५६।। जे कथा तो श्र
रत्नेथी तहिारी तुख्वननी शी गत थई ।।५७।।
माबापनी माया ते छांडी ।। जर्हा गंगा त्रटे तप

मांडी ॥ २८ ॥ नारीनी लक्ष्म केडां पाथरी ॥ मुंजे
मृणालशा सुंदरी ॥ रत्ना माथे वरात डके जलतो
॥ नाथ नारी साद्रूल जवलतो ॥ ३० ॥ मुंज वीक्रा
सी करे अकूना घा ॥ करतो मृणालशाने साद ॥ ३१
॥ रोई रोई कर्‍यां रातां चक्ष ॥ थयो दूरज लव
पामे लक्ष ॥ ३२ ॥ मुंजे क्रोडुं कहाडु बाधियुं ॥ तक्ष
णी कुले तन संतापियुं ॥ ३३ ॥ मनमां मृणालशा
तणो छे सांसो ॥ काया थई शाम लपतप त्हांवा
सो ॥ ३४ ॥ ॥ वचन ॥ ॥ मृणालशानुं
स्मरण कर्यूं ॥ ते कथा ओटलेथी रहीरे ॥ वार सा-
गी वीरने ॥ पछे नागने चिंता थई सही रे ॥ ३५ ॥
॥ ॥ कडवुं ॥ २८ मुं ॥ ॥ राग वेराडीनी देशी
॥ ॥ कृशी नारद वदे वचन तूं ॥ सांभल युधि
ष्टर राय ॥ प्रातःकाले नाग आव्या ॥ हेनो उलट
अंग न माय ॥ १ ॥ मेवा सुंदर साथे लाव्या ॥ अ-
न्यो आलक रह्ोता ॥ सरोवर पाले जाविने ॥ रि
तुध्वजनी वाटडी जोता ॥ २ ॥ वार लागि न आवि-
यो ॥ त्यारे गया अयोध्या मांह्य ॥ पूछी वातने [illegible]
तरु मारो ॥ कहां गयो ते क्यांह्य ॥ ३ ॥ मन्न सरवे रा
ति कहे छ ॥ रोतो रात्रुवित शलक्षा ॥ तेने तमारो

કાલો કેતો તેહાને વસ્યો છે વનમાં ॥ શાકો બ્રાહ્મ-
ણ મણિ લાવિયો ॥ કહ્યું મર્ણ રિતુધ્વજનું થયું ॥ તે
મૃગાલેશાયે સાંભળ્યું ॥ તવ તાળવું ફાટી ગયું ॥
પાછે રિતુધ્વજ ઘેર આવ્યો ॥ સૂણ્યું મૂઈ મૃગા
લેશા નારી ॥ તેમનો તેમ તે ગયો વનમાં ॥ ફ
મો થાક્યાં વારીવારી ॥૬॥ જન્યો પડ્યો લોમિ
પેરે ॥ વૃક્ષનાં વાયક સાંભળી ॥ થરથર ધ્રુજે કાંઈ
ન સુઝે ॥ પડતાં તો મુરછાવળી ॥૭॥ જે ઘરિ-
કાયે ઊઠ્યા જન્યો ॥ શરીરે આવી સાન ॥ રોતા
રોતા ને તા ન્નેતા ॥ ચાલ્યા તેહ સ્મશાન ॥ દા
ઝ્યો લુંજે તે ભસ્મને ॥ વળિ વનમાં આથડ
તા ॥ ફાંફાં બાંધવ ફાંફાં કરતા ॥ આરતથી ભિ
રડતા ॥ તે પર્યંત ન્યાય ઠરે ॥ ન્યેઠા ॥ પછી પા-
ડ્યા જન્યો ન્યાય ॥ ફેરે અઘોરવન્ન માંહ્યો ॥ બે-
ઠો દિઠો રિતુધ્વજ રાયા ॥૮॥ ધાઈ પાસે આવ્યા
જન્યો ॥ નેણે ભરિયાં પાણી ॥ રાજકુંવરે ઊઠિ
આલિંગન દીધું ॥ ગદગદ કંઠે વાણી ॥૯॥ અરે
ભાઈ ભલે પધાર્યા ॥ વનમાં પણ ન્યેવા આવ્યા
॥ હર્ષ અશ્રુ ઝરે મ્હારા ॥ શું મૃગાલેશાને લાવ્યા
॥૧૦॥ નાગ કહે કહાંથી આવે ॥ ભાઈ કહે એણે સ્મ-

शान निवारसं॥ मातपिता तजि राज मूक्युं॥ चि
राजोल्के आसरुं॥१३॥ ॥वणा॥ ॥
चिरा आसी विपत तुजने॥ ने उठे राजकुमार रे
मृगालेशा सरखी मानुनी॥ ताहुं सकल आठार रे
॥१४॥ ॥कडखुं॥ रखमु॥ ॥राग मेवाडनी
देशी॥ ॥ऋषि नारद वदे वचन॥ सुणो यु
धिष्ठिर राजन जी॥ स्नेह वचन सुणि नागकुंवरं
॥तव बोल्यो रे त्रुजित तन जी॥१॥ जोरी
वात जतते न भणो॥ मृगालेशानी काय जी॥
हरिहर ब्रह्मा भणिने घडे तो या॥ एह विन निप
ज थाय जी॥२॥ तमो मंदिर पधारो तमारे॥
लोगवो नाना विध लोग जी॥ मृगालेशा आ
वी के पधारो॥ म्हारो त्यारे उतरसी जोग जी॥
३॥ एहवुं कहीने आसन वाळ्युं॥ लस्मगांस
डि बोले जी॥ उ॥ मृगालेशा घेर नई जो॥ ए
वां घेलां घेलां बोले जी॥४॥ नागपुत्रे उपा
यो किधा॥ पण कहुं न धरे कान जी॥ पछे मृगा
लेशानी शोधने अर्थे॥ लमि लीयां त्रणलू
वन जी॥ पायम सलाने ब्रह्म सलारे॥ वणि
लीधुं वैकुंठ जी॥ शैव लोक हरि हर लीयुं॥ आएयो

પૃથ્વીનો અંતજી॥૮॥ એ પણ રૂપે જોઈને આવે
॥ચલિ રિતુધ્વજ પાસે રેહજી॥ નિસાયે જયે મં-
દિરે॥પણ તાતને વાત ન કેહજી॥૯॥ અન્નઉ
દક મિત્રોને ન કહ્યે॥ને આપો દિવસ ઉદાસ
જી॥શરીરે દૃષ્ટીત થઈ જન્યો॥ગાલ્યા એમ
ખટ માસજી॥૮॥ એક દિવસ પિતાયે પૂછ્યું॥
દૂબળાં દિસે તમ તન્નજી॥શોક સાગર માંહ્ય
બુડ્યા કેમ॥ નથિ કેવાત ભૂવન્નજી॥ નાયાય
ક સાંભળી તાત તણાં॥પછિ બોલ્યા નરિ
ને યક્ષજી॥મૈત્રિ કરશો જાલ પુઠ કેને॥માથે
છે દુઃખનાં વૃક્ષજી॥૧૦॥ પૂર્વ કથા સાંભળિયે
પિતાજી॥ એક અયોધ્યાનો ભુપાળજી॥ કે-
ની સાથે મૈત્રી હમારે॥પ્રાણ પે અતિ વ્હાલજી
॥૧૧॥ તેને મૃણાલશા નારી॥ હમે બાલિ કહિ
બોલાવીજી॥ પ્રેમદા તે મૃત્યુ પામી॥ વાત થઈ
ગઈ ભાવીજી॥૧૨॥ વિનતા વિયોગથી વૈરાગ
ઉપન્યો॥ ભેખ સન્યસ્તનો લીધોજી॥ કરીજે
કન્યાને નવ પરણ્યો॥ ઉપાય એક ન લીધોજી॥
૧૩॥મૃણાલશા આવે તો ઉઠે॥જીવન નહિ ઉપાય
જી॥ તે જોગી તો હમો પણ જોગી॥ દુર્જણી તે

थई कायर॥ ४॥ तात कहे तन आने कहो छो॥
एटलुं एक काम॥ मृगालेखाए आणीने आपुं
॥ अंतरय पडे नव हाम॥ ५॥ त्यानो निर्णय ईश्वर पा
सो॥ सेविये श्रीत्रिपुरार॥ भक्ति कीने शंभू
करी॥ ते आपशे ओ नार॥ ६॥ ॥
वलण॥ ॥ नारने ते वाउ शो॥ सुणी पु
त्र प्रसंन थया रे॥ अप्सरा जो अनंत लईने॥
लोणाने लोचन गया रे॥ १॥ ॥ कडवुं॥
३० मुं॥ ॥ राग वसंतनी देशी सननी॥
॥ ॥ शिव ने रीझववा॥ नृत्य आदे संगीत ना
दा॥ शिव॥ टेक॥ ॥ कैलास शिखरे आव्या त्रण न
णा॥ साथे अपसरा अनंत॥ लोणाने लुचने नृ-
त्य मांड्युं॥ कर्यो काम वसंत॥ शिव॥ १॥ ताल
मृदंग उपंग ने वेण॥ बोले झमझम पाग घुघर
॥ झनकार करे लोणानी आगळ॥ पूठे पुरे पुत्र स्व-
स्वरा॥ शि०॥ २॥ ताल सूर चूके नहीने॥ नाचे कदि
ने मरडी॥ फेर फूदी फरे प्रेमदा॥ जन्यो जन्य लून
लरडी॥ शिव॥ ३॥ नृत्य सुंदर नाग मांड्यो॥ थै
रह्यो थै थै कार॥ शृंगार सज्या सकु कामनी॥ कठे क
मणना हार॥ शिव॥ ४॥ हाव भाव लाव्य लईने शंकर

॥मंदिरमांथी डोल्या॥ल्हारनी कुणी नामवाला
ड्या॥थै थै मुःखे जोल्या॥शिवजी विराजे छे, नृ
त्य करे संगित नाद॥शिवजी॥पा॥सिंगी तुरना
द्र अति घोर॥विषेरी त्यां नचाया॥नाग अजि-
न गुलाल घोर डो॥शंकरने लक्ष्म सुहाया॥शिव
॥दा॥कंठ हार सर्पना सणगे॥वागे डमरू ने डाक॥
आवो रे ऊभया वर कंठ छा॥प्रेमे मारे हाकु॥शीव
॥डा॥नीलकंठजी नाचे झमझम॥सर्वे साध्यू सं-
गीत॥नागनो नृत्य सुंदर देखी॥हरख्यु शंकरनुं
चित्त॥शिवा॥टा॥मागो नाग जे मन छे जे ते॥कहुं
वो तृप्ति मानी॥जरे शिव मृदालसा जी बो॥जे
मागुं वरदान॥शिवा॥मा॥मातृ कल्लनो रितुं ध्वज
कुंवर॥तेहनी मृत्यु छे नार॥मृत्य संजिवन थाये
नारी॥छे प्रीत वडे संसार॥शिवा॥पणा॥तमो प
रने अर्थे आयश दियो॥कहुं हरख्यो करे हरहर॥
जे मृत मृदालसा निरखो॥मह्यो आपुं जेहव
र॥शिवा॥चा॥जमुना तीरे जजो तमो॥कहुं
जेह जनूपाल॥आद्ध करजो पीतृ केरुं॥करे आप-
जो त्रिपिंड दान॥शिवजा॥परा॥अद्यनो पींडल
गी लेजो॥त्रण कुंडनो ते भाग धारी॥तेनी म-

ध्यमां कृष्ण कहाव्ये अशो ॥ मृगालशा ने नारी ॥ शीव
॥७॥ ॥वलण ॥ ॥ निकळशे मृगाल
शा नारी ॥ एहेवुं कहीने हरवख्या रे ॥ वर लेवपा
म्या पन्नग त्रण ते ॥ अमुनाने मारग पळ्या रे ॥
॥१॥ ॥ कडवुं ३१ मुं ॥ ॥ राग गोडीनीम्यो
पारडी ॥ ॥ पन्नग त्रण त्यण हरषित थया ॥
गंगाने ऊप कंठे गया ॥ १ ॥ पिताये तव बळाव्या त
न्या ॥ जो ल्यां रितुध्वज राजा ॥ २ ॥ कहेता न
वर पाम्यानी पेरा ॥ पण तेडि लावजे तरुने घेर ॥
३ ॥ हुं आवुं छुं आद्धन करी ॥ लेउं लेछे जे सुंद
री ॥ ४ ॥ ले तमने लागशे आवतां वार ॥ तो ले
त्यां मरशे निरधार ॥ ५ ॥ एहेवुं कही वोळाव्या
त्याळ ॥ नाग आवीने जेम ततक्षण ॥ ६ ॥ हालें
शा ज्या पृथ्वी प्रयन्त ॥ तव तल पितरना मुख्या पि
न्त ॥ ७ ॥ मध्यनो पिंड विडारण कर्यो ॥ त्रण कृष्ण
नो मणिधर निसर्यो ॥ ८ ॥ तेनी मध्यमां कृष्णवि
डारण करी ॥ तेमांथी निकळी सुंदरी ॥ ९ ॥ विश्व
वस्तु तणी ते छिकरी ॥ हरी कृष्ण थकी अवतरी ॥
१० ॥ भुजे नृपती पतिनुं नाम ॥ कहे कहां जावी
छउं आगम ॥ ११ ॥ अरजकु ते हिरी कुमार ॥ अ-

यित्रनंबर ६ ठो.

अरजकनाग
श्राद्ध करेछे.

मदालशा नाग
मांथी निकली.

पींड
पींड
पींड

यमुनानदी



थइ छेति कह्यो समाच्यार ॥ ४० ॥ त्यारे पाये पडी मृ-
घालशा ॥ तमो पिता सत्य हिले भुकवश्या ॥ ४१
॥ मुने दाखवो वननो पंथ ॥ कहां जेह छे नगीथ-
इंथ ॥ ४२ ॥ नाग कहे तुं जाव पाताळ ॥ मळशे
स्वामी संसय टाळ ॥ ४३ ॥ पछे आव्यो साथे तेना-
गधे कृहाण ॥ म्यार कर्यो जकुपेर ॥ ४४ ॥ अेकांत
हती अेक ओरडी ॥ त्यां राणी मृघालशा गोरडी
॥ ४५ ॥ सकळ वस्तु ते मांहे लरी ॥ हार लीधी रा-
णी सुंदरी ॥ ४६ ॥ अेक धा अेटलेथी रह्यां ॥ पेना-
कुंवर मेत्रने मळिया सही ॥ ४७ ॥ आवता दीठा
जन्यो वीर ॥ रितुध्वजे नेणे लरियां नीर ॥ ४८ ॥
लले लाईयो कीधो जुवार ॥ माणे माणे मुक्यो
मित्राच्यार ॥ ४९ ॥ मृघालशाये मुने परहस्यो ॥
तो तमो प्रेमश ॥ माटे घशे ॥ ५२ ॥ देवे कीधो भुनेकु
जणो ॥ तो मन भूकी तमो शाने मणो ॥ ५३ ॥ आत्रा
टले हाडे शाने आविया ॥ शक मृघालशाने लावि
या ॥ ५४ ॥ सर्प कहे रे महिपती सुणो ॥ अेरलक पि-
ता जे छे हमतणो ॥ ५५ ॥ तेने समाच्यार हमथी
थयो ॥ वृद्ध नाग घणुं दुःखी थयो ॥ ५६ ॥ तेना मो
कल्या आव्या आमा कह्युं मोगण ते डीलावो घाम

रणा ते आवे तो कमुं कुंजन्ना ॥ माटे याले आ-
नंधव नन्नारदा ॥ रितुध्वज कहे साच्यो लेग
तो हावे शा कोणा लोगा ॥ रणा मृहालशाने
पीरशे अन्ना ॥ कार जा मुख करे लोन न्ना ॥३०
॥ ते लूजीने कुंकुम कमुं ॥ आजामनो जाम सूघा
दुख अमुं ॥३१॥ मैत्र कहे गुं थाय देघवात ॥ मृह
लशा आपे कम तात ॥३२॥ कहेवो बोलतेजा
नंधवे कह्यो ॥ रीतुध्वज ऊठी बेठो थयो ॥३३॥ नारी
जेंनामे थयो केवण ॥ याले नैये थै ऊतावळ
॥३४॥ पाताळ विशे ऋण लण परवर्या ॥ जग
घ लणमांहे ऊतर्या ॥३५॥ नागनी विद्याशी
खवी ॥ तेथी ते रायने लणगती हवी ॥३६॥ अ
रलकुनी पासे आव्या आप ॥ शंलू तणो ने प
रछे प्रताप ॥३७॥ विविध पेर करी कोण यार
॥ पण न कह्यो पेलो समाचार ॥३८॥ स्वाग-
ता कीधी सर्प सर्वे मळी ॥ रालकुंवरने लेयो नै
णे वळी ॥३९॥ पण ते नहीं लेतो कोस्वाद ॥
कोसाथे न करतो संवाद ॥४०॥ ॥ वलण
॥ ॥ वाद न करे अवर को साथ ॥ मुःख
मृहालशा ना भरे ॥ विदाय थाये रितुध्वज त्यां-

थी ॥ द्विजने करी प्रणाम रे ॥४॥ ॥ढाल ३४ मुं॥
३४ मुं॥ ॥राग रामग्रीनी देशी॥ ॥
कुरलोडी कुंवर वदे ॥ मुने विद्यायकीने ॥ राजमोत्ले
गिने लोग घटे नहीं ॥ ते माटे आ ज्ञा दीजे ॥१॥ राज
रत्नकुवण तुं बोलीजा ॥ मनगमी वस्तु मागो ॥
लल्लन मनथी परहरी ॥ ज्ञान मांहेथी लगो ॥ र
॥ रिद्ध तुं ध्यन वणतुं बोलीयो, तमो सांभलोनीरा
या ॥ त्यारे ने कांई मागवुं, तो ॥ ईंद्रथीन अपाया ॥
३॥ राज सुख सकु परहस्युं ॥ ने थयो वियोगे वेरा
गी ॥ लोगीने शुं मागवुं रे ॥ लक्ष्मी परित्यागी ॥
४॥ नागकहे अमना कीलो ॥ मुज घरथी पाछा न
जो ॥ घरित होय ते मागीजो ॥ रायने पिक्क सुणी
थाजो ॥५॥ त्यारे मन लीन्युं लूपतिनुं ॥ मागुं ऊले
प्राणी ॥ अचीतवात जे आपशो ॥ मृगांकलेखा भुक्र
राणी ॥६॥ बोल बोलीगणे पाछा ॥ अरेनैणत्र
मृघारा ॥ शोक्यणनी सांकल ल्हे वी ॥ नाजवी पूरवा
रा ॥ ते मागकहे तारक नहीं ॥ बोल्यो ते तो वणतो
॥ कोणे लेयुं कोणे सांभल्युं ॥ पछे बोल्यो ते गणग
णतो ॥ ८॥ अण घटतूं मागूं छउं ॥ लेइ कोछो सकु
कोठी ॥ निवती करी आपो मुनेरा ॥ नेमृगांकलेखा मोटी

॥ला॥ नागकहेरुं मागियुं॥ अेक मृदालशा नार
॥नवनवी कन्या कोमळी॥ आणि आपुं हलशार॰
॥ओपेली ओरडि विषे॥ कैं लएो नवीतम नेक
॥प्रेम करो तो पोलरो॥ मृदालशा वायक॥१४॥
सुणी राय आव्यो उगमगतो॥ ओरडा लगी आ
वी॥ कांक मारी छे प्रेमदा॥ बेठो कुमार तेआवी
॥१५॥ अन्यो अन्य नवीतम विलासो॥ वाणी थ
की अतीलाडो॥ अन्योअन्य प्रित प्रकार पडतां॥
कल्यां बेकुकुमाडो॥१६॥ ओरडि उघडी गछने॥
लरायां सोयबा॥ सह मारकामी वधां अन्यो॥ थ
यां मन प्रसन्न॥१७॥ वपराव्यो ते वछूटे नहीं॥ स्ने
हनी जति कहाणी॥ नाग सरवे हरखीया॥ प्रिति
स्नेह परस्पर जाणी॥१८॥ ॥वणण॥ ॥
वाह वधाते वाह सकु॥ ने मळ्यां नरने नारे॥ सु
ख पाम्यां संसारनुं॥ हवे जय जयोध्या कुमारे
॥१९॥ ॥कडवुं ३३ मुं॥ ॥राग श्रीनी
देशी सरकनी॥ ॥मृदालशाने महिप-
ती॥ मळे प्रेम नदीने पुरे॥ नेत्र तुरी असवार
थईने॥ मळ्यां अन्यो शुरे॥१॥ व्योम मारग
चिलणी चमकी॥ त्यम कुंथे लीधी कामनी॥ संतो

ख्यो स्वामि पोतिको ॥ पछे बोली लामनी ॥२॥
मंदिर पधारो महिपति ॥ सर्वने देवा सुःख रे ॥ ता
परणे तेहेना तननो ॥ जेतां तमारुं मुःख रे ॥३॥ व
चन सुणी सुंदरी केरां ॥ गयो नागसलानी मांह्यरे
॥ मुख कज मन हर्ष अधिको ॥ मन मोहथी मलका
य रे ॥४॥ जेनी कमण सरखी हथेणी ॥ नेत्र जेअं
बुज रे ॥ फिरतो मदमातंग जेवो ॥ सुंदर सरे जानु
जरे ॥५॥ सर्व जनोये मान दिधूं ॥ आपियुं दिव्या
सन्न रे ॥ पांच दिवस फोए ॥ राखिया ॥ सति स्या
थे राव जरे ॥६॥ मूहूर्त जेयुं जेरी जोा ॥ कुलाति
थी कुलवार रे ॥ गांधर्वि साथे चालिया ॥ जन्यो
ते नरनार रे ॥७॥ स्कन्ध सर्प साथे थया ॥ सक
कुल स्रृंगार रे ॥ वाजित्र जहाना विधनां ॥ थैरह्यो
जयजयकार रे ॥८॥ विदाय मागीने वण्या ॥ आन
व्या जयोध्याग्राम रे ॥ नरनार जन्यो शोलतां ॥
रवि तेज रति ने काम रे ॥ ला वस्त्र वाहन नागनां
तेणे शोलित कांति रे ॥ रीके लक्ष्मि सापि आव्यो
॥ हरिहरनी पडे ज्यांति रे ॥९॥ गारण तूरन केरी घेरी
वागे ॥ शोलित छत्र निशाण रे ॥ राजुलितनी स
लामां जई ॥ सेवके किधूं जाण रे ॥१०॥ नगर स-

घणुं जीव्यसुं रे ॥ शिव्युं अंगन मायरे ॥ आव्य
मे सरणुं सांभळीने, धोड्या शत्रु जित रायरे ॥ १
॥ घर आव्ये रुस्ती अवळे लउ ॥ सांभळ्या आस्वारे
॥ छांरणां छांट्या मोह थयो छे ॥ पद्युण जांघां छा
रे ॥ २ ॥ मातपिता आवी मण्यां ॥ कुट ज्यां
तननां दुःख रे ॥ माता मोती ये वधावी ॥ सुख ल
ई पामी सुख रे ॥ ३ ॥ स्नान होळुं सांभळ्युं ते हुंश
ने कुंव पामी मोर्ई रे ॥ गात ते मंदिर आव्यां ॥ प्र
न मोही न्वे छेरे ॥ ४ ॥ नाग नंदन आवि मळिया ॥
शत्रुजितने लाग्या पाय रे ॥ आशिष्य तमने थया
ते ॥ शिव तणी कीपाय रे ॥ ५ ॥ अपर्इ ति मांडी
कह्यो ॥ सर्व ते समाचार रे ॥ वात घरघर्इ थोड
लोके ॥ मोर्ई कवी जीवाडार रे ॥ ६ ॥ मानवा
धुं मानवीनूं ॥ सहू पुछे मृत्युनी वात रे ॥ समा
चार सुणी नारना ॥ मळवा आव्यां मातने तात
रे ॥ ७ ॥　　॥ वलण ॥　　॥ आवी मळी
गयां मात तातने ॥ आनंद्यां अति घरे रे ॥ पछी
मृगालशा धुंकुरे रे ॥ ते लर प्रेमानंद वदे रे ॥ ८ ॥
॥　　॥ कडवुं ॥ ३४ मुं ॥　　॥ राग धवळ धन्
न्यासीनी देशी ॥　　॥ नारद ऋषि वाणी वदे रे

॥सुणो युधिष्ठिर रायजी॥ नर नारी संयोगे दिवसो
॥हास विनोदे नयजी॥४॥ पाताल केतु दईते आ
व्यो॥ अतितनूं धरी रूपजी॥ केनी माय न जा
णे कोणजी॥ शिष्यो रितुध्वज भूपजी॥२॥ मृदा
लशानो मारनारो॥ आव्यो छे जीवि धारजी॥
राजाये जोणजि, शिष्यो ने मुक्यो॥ नवदि धो
केने प्रहारजी॥७॥ ओक दिवस सो अतितने
तेड्या॥ भोजनने भोवनजी॥ ते मणतो पे
लो दैत्य आव्यो॥ सघणूं जाधूं अन्नजी॥८॥
दैत्ये माया प्रगट करीते॥ नवे रितुध्वज धिसजी
॥पम्प्र ग्रहिने केश आव्या॥ करी कृष्टनुं छेधुं शीश
जी॥५॥ जय जयकार थयो पुर मध्ये॥ धन धन धन
रितुध्वज रायजी॥ सुण वृत्ति सो पामवा लाग्यो
॥कृष्ण समो महिमायजी॥१०॥ पछि राजा जित
थयो तप करवा॥ राज पुत्रने आपीजी॥ सत्य
धर्म प्राण रितुध्वजनी॥ रही दशो दिश व्यापी
जी॥११॥ केटले वरसे मृदालशाये॥ पुत्र प्रसव्या
च्यारजी॥ रूप कळा गुण सुंदर देखी॥ पुत्रे रोज
ल्युं छारजी॥१२॥ सत्य जितने सत्य करमी॥ ३
जुं तनेवर्क नामजी॥ महाज्ञानी पुत्र थया ते॥

रीतुध्वजराजानीसला.

નાગપુત્રો.



केवळ आतमारामजी॥ मृगालनरायें लणा-
व्या जाळजु॥ सृष्टिकर्ता रखउद्धारजी॥ पारणा
मांथी हालजु गातां॥ तज्यो तेणे संसारजी॥
म्होरा थई वन मध्ये चाल्या॥ मातनो लई उपदेश
जी॥ चारे कुंवर गंगातीरे जई॥ तज्या कर्मना क्लेश
जी॥४४॥ पितु ध्यन दुखि थयो अतिशे करुणालो
गवशो राज्यासनजी॥ अरे अजाणातें लोग
मुकावी॥ जोगी लीधा तनजी॥४५॥ नारी कहे
हे नाथजी रे॥ ए वारता छे सत्तजी॥ जेत-
मो घर सून मांड्युं॥ तो शीशी पडी विपत्तजी
॥४६॥ एहवुं सांलळ्युं नवस्वामिये॥ तव थयुं
ब्रह्मज्ञानजी॥ उठोनी अजाणा वन जईये॥
लजिये श्री लगवानजी॥४७॥ कामनी कहे रे
स्वामि म्हारा॥ उदरमां छे पुत्रजी॥ ते प्रस
वे के आपण जईशुं॥ सोंपी तेने घर सुत्रजी
॥४८॥ पछे पुरे मासे पुत्र प्रसव्यो॥ अलरक
नाम तो धरियूंजी॥ म्होटो थयो ने राज सोंप्युं॥
माबापनुं कह्युं चित धरियूंजी॥४९॥ मात तात
कहे जैये तप करवा॥ तमो प्रजाने पाळोजी॥ मा
तताततनां वचन सुणीने॥ पुत्रे उत्तर पाछो वा-

ज्योतमांसमानजेगी थईने जरा वधारे॥ तोयज
दृढ ज्ञानी नथीजमां घणुं नीर विशेशुं नव्हे नि
मणा तो नाह्ये छे मच्छ नो साथजमां॥ता ॥
वसणा॥　　　॥साथ मिननो रहे जळमां॥
पण परमेश्वरने नव मळे॥ गृहस्थाश्रममां
प्रेलु मळे॥ ते मुक्ती वन कोटळव मळे॥ १॥ ता ॥
कहवुं॥ उपमुं॥　　　॥ राग धन्यासीनी दे
शी॥　　　॥ वाद करयों मात पितायजमां॥
लाईयोने तेडवा लयजमां॥ ते ज्ञानथी छंडा
व्याजमां॥ पाछा गृहस्ताश्रम मंडाव्याजमां॥ १॥
॥　　　॥ढाळ॥　　　॥ गृहस्ताश्रमने
वर्णव्यो॥ भंडियो संन्यास॥ मन स्थिर छे
पोता तणुं तो॥ समिप छे अविनाश॥ २॥
हरि विना बीजुं कोनथी॥ मन कल्पित आ
संसार॥ मन सम्यूं तव जाणवुं॥ जे जगत
नो निस्तार॥ ३॥ ब्रह्म त्रिगुणी अेक छे॥
आद्य अंतने मध्यम सार॥ ब्रह्मलाव त्रिगु-
णे राख्यो॥ तो उतरशो लव पार॥ ४॥ ज्ञा
न अलौकिक अे कह्युं॥ आनंद सरवे पामि
यां॥ मात पिताने पुत्र कोंये॥ संकट सघळां

વામિયાં ॥૫॥ કેટલે જેક વરશે મૃદાલસા ॥
તે સ્વામિને તેડી ક્રીા॥ રાજ સોંપ્યું પુત્રને ॥ગાં-
ઘર્વ લોક તે પરવરી॥૬॥ સન્ત ગુરૂ કહે રસલ-
નને ॥ જે કહ્યો મહું ઈતિહાસ ॥ નારદ કહ્યું
યુધિષ્ટરને ॥ તવ ઊપન્યો ઉલ્હાસ ॥૭॥ ચરિ-
ત્ર કથા માર્કંડ પૂરાણે ॥ તેહનું વિસ્તાર્યું આ-
ખ્યાન ॥ સકલ પદારથ પામિયે ॥ જે સાંભ-
ળિયે વ્યાખ્યાન ॥૮॥ જે કથા અદ્ભૂત રસ-
ની ॥ તે મોઈ લેચી પ્રેમદા ॥ જે કથા પ્રેમે સાં-
ભળે ॥ તે સુખી હોય સર્વદા ॥૯॥ ગાંધર્વ ક-
ન્યા ક્ષત્રિસ્વામિ ॥ રૂષી ગાલવનું ચરિ-
ત્ર ॥ નારદ ધર્મ સંવાદ સાંભળે ॥ દેહ થાય
પવિત્ર ॥૧૦॥ ગાય શિખે કે સાંભળે ॥ ભા-
વ સુંદર મન ધરે ॥ મહિમા સુણે મૃદાલ-
શાનો ॥ તે ભવસાગર સહેજે તરે ॥૧૧॥ સં-
વત સત્તર અઠાવિસ ॥ ચૈત્ર વદી પાંચમ રવી
॥ સુંદર પ્રતાપ કું નથી જેતો ॥ કથા જે પૂ-
ણ હવી ॥૧૨॥ સંવાદ ધર્મ નારદ તણો ॥ સાં-
ભળે શ્રોતા સુખ લહે ॥ જ ભ્યાસ સર્વ જ-
નોજે કરવો ॥ વિપ્ર પ્રેમાનંદ કહે ॥૧૩॥ ॥

॥ ॥वलण॥ ॥विप्र प्रेमानंद कहे॥ आ कविता छे वैखरिरे॥ आख्यान ए पूरण थयुं॥ श्रोताजन बोलो श्रीहरीरे॥ १४॥

॥ ॥इतिश्रीमदालसाख्यान संपूर्णं॥

